

नए नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

## सत्र 19: यूहन्ना का समापन और प्रेरितों के कार्य का परिचय

डॉ. टेड हिल्लेब्रांट द्वारा

### A. मसीह की महिमा की समीक्षा [ 00:00-4:48]

**ए: कम्बाइन एबी; 00:00-10:44; जॉन में महिमा, संक्षिप्त अनुपूरक**

नमस्कार। हमने जॉन की पुस्तक पर कुछ व्याख्यान दिए हैं, और पिछली बार जॉन में हम चरित्र चित्रण पर चर्चा कर रहे थे। प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण: निकोडेमस, नथानिएल, कुएँ पर खड़ी महिला, और फिर हमने थॉमस के साथ समाप्त किया। थॉमस को अक्सर "संदेह करने वाले थॉमस" के रूप में जाना जाता है और मैंने यह दिखाने की कोशिश की कि थॉमस के अलग-अलग पहलू थे जो साहसी और जिज्ञासु थे। उसे केवल "संदेह करने वाले थॉमस" के रूप में लेबल करने से आप उसके चरित्र के बहुत से पहलुओं को भूल जाते हैं। गॉर्डन कॉलेज में डॉ. हंट, जॉन की पुस्तक के पात्रों पर एक पुस्तक तैयार कर रहे हैं, और यह लगभग 600 पृष्ठों की पुस्तक होगी, जाहिर है, और दुनिया के कुछ प्रमुख विद्वान जॉन के विभिन्न पात्रों का वर्णन करते हैं और जॉन की पुस्तक में वे कैसे परस्पर क्रिया करते हैं। तो जॉन संवेदनशील है। हमने उसे पहले "वह शिष्य जिसे यीशु ने प्यार किया" कहा था और वह संवेदनशील लगता है और इन व्यक्तियों के साथ व्यक्तिगत स्तर पर चीजों को उठाता है। अब हम बस कुछ मिनट लेना चाहते हैं, और जॉन की पुस्तक को समाप्त करना चाहते हैं और फिर प्रेरितों की पुस्तक पर आगे बढ़ना चाहते हैं। अभी, चलो जॉन, यह काम खत्म कर दें।

तो हमने थॉमस के बारे में बात की, और अब मैं जो करना चाहता हूँ, वह है, कुछ ऐसे विषयों का परिचय देना, जिनसे यूहन्ना निपटता है। जिन विषयों से वह निपटता है, उनमें से एक है महिमा की यह धारणा। महिमा के लिए यूनानी शब्द *डोक्सा* है। और *डोक्सा*, आप इसे डॉक्सोलॉजी में *डोक्सा से पहचानते हैं*। उस परमेश्वर की स्तुति करो, जिससे सभी आशीर्वाद बहते हैं, नीचे सभी प्राणी उसकी स्तुति करते हैं, स्वर्गीय सेनाओं के ऊपर उसकी स्तुति करते हैं,

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की स्तुति करते हैं। हममें से कई लोगों ने चर्च में डॉक्सोलॉजी गाई है। *डोक्सा*, का मूल रूप से अर्थ है "स्तुति" या "महिमा।" तो यहाँ महिमा की यह धारणा, पुस्तक में, यूहन्ना इस शब्द का उपयोग करता है। यूहन्ना 1:14, वह कहता है, "हमने उसकी महिमा देखी है, जैसे परमेश्वर के एकलौते पुत्र की।" "हमने उसकी महिमा देखी है।" इसलिए वह यीशु को संदर्भित करने के लिए इस शब्द "महिमा" का उपयोग करता है। फिर अध्याय 17, श्लोक 22 और 24 में, यूहन्ना फिर से इस विषय को उठाता है। वह कहते हैं, और मैं फिर से श्लोक 21 से शुरू करता हूँ। वह कहते हैं कि "वे सब एक हो सकते हैं, पिता, जैसे तू मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ।"

अब जैसे ही मैं यूहन्ना अध्याय 17 कहता हूँ, मेरे मन में क्या आता है? यूहन्ना 17 यीशु की महान महायाजकीय प्रार्थना है जहाँ वह अपने पिता से प्रार्थना कर रहा है और आपको यीशु की प्रार्थना का एक पूरा अध्याय मिल गया है। आप प्रार्थना का अध्ययन करना चाहते हैं, यह प्रार्थना पर अध्ययन करने के लिए एक अद्भुत अध्याय है। यह यीशु की अपने पिता से महायाजकीय प्रार्थना है। वह कहता है "मैं चाहता हूँ कि वे एक पिता के समान हों, जैसे कि आप मुझ में हैं, और मैं आप में हूँ।" और फिर यूहन्ना 17:22 में, "मैंने उन्हें वह महिमा दी है जो आपने मुझे दी है, कि वे एक हो सकते हैं जैसे कि हम एक हैं।" तो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की यह एकता, यह पिता/पुत्र एकता चर्च को दी गई है, "ताकि वे एक हो सकते हैं जैसे कि हम एक हैं।" जब आप चर्च के विखंडन पर विचार करते हैं तो यह दिलचस्प होता है। लेकिन यहाँ एक महान कथन है कि चर्च एक हो, और यह पिता और पुत्र की महिमा और उनकी एकता को दर्शाता है। पद 24 तक। "पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है वे जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरे साथ रहें और मेरी महिमा को देखें। वह महिमा जो तूने मुझे दी है क्योंकि तूने जगत की रचना से पहले मुझसे प्रेम किया।" तो यीशु कहते हैं कि एक बात जो उन्हें खुशी देगी वह यह है कि उनके अनुयायी उस महिमा को देखें जो परमेश्वर ने जगत की रचना से पहले उन्हें दी है। यीशु ने इसे याद किया और उन्होंने अपने पिता से प्रार्थना में इस पर प्रकाश डाला। तो महिमा यूहन्ना की पुस्तक में एक बड़ा विषय है, यह *डोक्सा*, महिमा। एक और बात जो हमने उसकी महिमा को देखा, वहाँ, हमने अभी देखा। काना में, विवाह भोज में, जब वह पानी को शराब में बदलता है, तो कहा जाता है

कि इससे उसकी महिमा प्रकट हुई। तो महिमा का यह विषय लाजर की मृत्यु पर फिर से उठाया गया है। वहाँ महिमा दिखाई गई है। फिर महिमा प्रेम और विशेष रूप से एकता के माध्यम से प्रकट होती है क्योंकि पिता और पुत्र एक हैं, और यही हमने अध्याय 17 पद 22 में पढ़ा है। तो महिमा यूहन्ना की पुस्तक में एक बड़ा विषय है।

## **बी. जॉन, द सिनॉट्रिक सप्लीमेंट: कोई बचपन की कहानियाँ, वंशावली या प्रलोभन नहीं**

**[4:48-10:44]**

और अब मैं जो बात कवर करना चाहता हूँ, वह है जिसे हम कहते हैं--यूहन्ना की पुस्तक समकालिक सुसमाचारों की तुलना में बहुत बाद में लिखी गई है। अधिकांश नए नियम के विद्वान इस पर बहस करते हैं, लेकिन मार्कन की प्राथमिकता को स्वीकार करते हैं। तो आपके पास मार्क की तरह पहले आने की बात है, 50 के दशक, 60 के दशक में, और मैथ्यू और ल्यूक मार्क पर निर्भर थे, और फिर हमने क्यू स्रोत को देखा जो मैथ्यू और ल्यूक द्वारा साझा किया गया था लेकिन मार्क में नहीं था, और वह क्यू स्रोत एक काल्पनिक स्रोत है लेकिन मूल रूप से मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, समकालिक सुसमाचार, वे सभी बहुत पहले के हैं। ऐसा लगता है कि जॉन बहुत बाद में लिखा गया था। इसलिए ऐसा लगता है कि कुछ लोग जॉन को समकालिक सुसमाचारों-मैथ्यू, मार्क और ल्यूक का पूरक मानते हैं। जॉन बाद में आता है और इसलिए वह मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बारे में जानता है। वह कहता है, "ठीक है, उन्होंने आपको यीशु के बारे में यह बताया, उन्होंने आपको वह दिया है जो आपकी बाईं आंख में है। अब मैं आपको दाईं आंख से एक अलग दृष्टिकोण देने जा रहा हूँ ताकि आप यहां एक त्रि-आयामी यीशु पा सकें। तो वह जो करता है, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, वह उसे 92% अनूठी सामग्री देता है। 92% पूरी तरह से अनूठा है जो हमारे पास कहीं और नहीं है। केवल 8% 5000 को खिलाने जैसी चीजें हैं, जो सभी चार सुसमाचारों के साथ साझा की जाती हैं, लेकिन यूहन्ना में 92% अलग है। इसलिए यूहन्ना को एक संक्षिप्त पूरक माना जाता है। वह इन अन्य लोगों, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक द्वारा लिखी गई बातों को पूरक बनाता है। इसलिए यूहन्ना एक संक्षिप्त पूरक है।

अब मैं इसे यहाँ कई बिंदुओं के साथ स्पष्ट करता हूँ। उदाहरण के लिए, जॉन के पास यीशु के बचपन की कोई कहानी नहीं है, उसके पास यीशु के बेथलेहम जाने का कोई रिकॉर्ड नहीं है,

हेरोदेस और ज्योतिषियों या बुद्धिमान पुरुषों का कोई रिकॉर्ड नहीं है, बेथलेहम में शिशुओं की हत्या का कोई रिकॉर्ड नहीं है, लूका के पास खेतों से चरवाहों के आने का कोई रिकॉर्ड नहीं है, उसके 12 साल के होने और मंदिर क्षेत्र में पीछे छोड़े जाने और मंदिर के नेताओं के साथ तर्क करने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। जॉन के पास इनमें से कुछ भी नहीं है। बचपन की कोई भी कहानी नहीं है। जॉन शुरू करता है, "शुरुआत में वचन [ *लोगो* ] था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।" इसलिए जॉन मसीह के बारे में अधिक लौकिक दृष्टिकोण लेता है और इसलिए एक तरह के उच्च धर्मशास्त्र को दर्शाता है, यीशु और उसके लौकिक महत्व के बारे में एक बहुत ही विकसित विचार है, इसलिए ऐसा लगता है जैसे मैथ्यू और ल्यूक ने इतिहास को जोसेफ के दृष्टिकोण से, मैरी के दृष्टिकोण से दर्ज किया है, इसलिए यह कवर किया गया है, इसलिए मैं यीशु को एक अलग तरीके से देखने जा रहा हूँ। और इसलिए जॉन के पास यीशु के बचपन की कोई कहानी नहीं है। शून्य। दूसरी बात, उसकी कोई वंशावली नहीं है। मैथ्यू के पास जोसेफ की वंशावली है, ल्यूक के पास मैरी की वंशावली है, और इसलिए आपको मसीह की दो वंशावली मिलती हैं और जॉन की पुस्तक में कोई वंशावली नहीं है। इसलिए जॉन कहते हैं, "ठीक है, उन्होंने इसका ध्यान रखा है, मुझे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, मसीह को जंगल में खदेड़ने का कोई प्रलोभन नहीं है, शैतान वहाँ है, जहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास करता है। शैतान आता है, और आप जानते हैं, "इन पत्थरों को रोटी में बदल दो," "मंदिर के शिखर से कूद जाओ, उसके स्वर्गदूत तुम्हें उठा लेंगे," और फिर वह उन्हें दुनिया के सभी राज्य दिखाता है। ये सब मैं तुम्हें दे दूँगा अगर तुम झुककर मेरी पूजा करो।" ऐसा कुछ भी नहीं, शैतान द्वारा मसीह का प्रलोभन, जो मैथ्यू 4 में है, ऐसा कुछ भी जॉन की पुस्तक में नहीं होता है। जंगल में मसीह का प्रलोभन बिल्कुल भी नहीं है। शून्य।

पहाड़ी उपदेश नहीं है। अब पहाड़ी उपदेश बहुत बड़ा है। ल्यूक ने पहाड़ी उपदेश को विभिन्न रूपों में दर्ज किया है, लेकिन मैथ्यू में पहाड़ी उपदेश बहुत बड़ा है। यह यीशु का तीन अध्यायों वाला उपदेश है। जॉन पहाड़ी उपदेश का बिल्कुल भी वर्णन नहीं करता है। इसलिए यह दिलचस्प है कि आपको ये नहीं मिलते। क्या आपको याद है कि हमने मैथ्यू में कैसे कहा था, ये विस्तृत लंबे प्रवचन थे? तो आपके पास पहाड़ी उपदेश है, आपके पास जैतून का प्रवचन था, आपके पास बारह को भेजने का प्रवचन था, आपके पास मैथ्यू 13 में राज्य के दृष्टांत थे। जॉन प्रवचन वाली

बात नहीं करता, यीशु के ये लंबे उपदेश। जॉन ऐसा नहीं करता। वह और अधिक करता है, जैसा कि हमने पहले बताया, लोगों के बीच यह बातचीत जहां यीशु का उल्लेख होता है और वह नतनएल से मिलता है। "मैंने तुम्हें देखा, इससे पहले कि फिलिप ने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे बुलाया।" और इस तरह की और भी बातें। यूहन्ना के पास लोगों के साथ बातचीत करने के लिए लंबे प्रवचन हैं, जबकि मत्ती बहुत अच्छा है। इसलिए यूहन्ना में पहाड़ी उपदेश नहीं है; कोई दृष्टांत नहीं है। मत्ती, मरकुस और लूका, इन सभी के पास बोनो वाले और भेड़-बकरियों के दृष्टांत हैं। प्रतिभाओं का दृष्टांत, और सभी तरह के दृष्टांत जो दोनों में हाइलाइट किए गए हैं और लूका हमें सामरी के साथ दृष्टांतों का एक अलग सेट देता है, अच्छे सामरी का दृष्टांत, लाजर और दिवेस, और उड़ाऊ पुत्र। मत्ती में हमें जो दृष्टांत मिलते हैं, वे लूका में मिलने वाले दृष्टांतों से कुछ अलग हैं। और उन सभी दृष्टांतों में से, और मत्ती और लूका में उनमें से बहुत सारे हैं, और मरकुस के पास भी कुछ हैं, उन सभी दृष्टांतों में से, उनमें से कोई भी यूहन्ना की पुस्तक में नहीं है। शून्य। तो यह बहुत दिलचस्प है कि दृष्टांतात्मक तरीकों से यीशु की शिक्षा को अन्य तीनों ने अपनाया है जबकि यूहन्ना, दृष्टांतों से अलग तरीके से आगे बढ़ता है, वहाँ कोई दृष्टांत नहीं है। यहूदी धर्म प्रचार, अन्य सुसमाचारों में से अधिकांश, मत्ती, मरकुस और लूका, यीशु पर ध्यान केंद्रित करते हैं जब यीशु गलील में होते हैं, और इसलिए आप यीशु को पानी पर चलते हुए पाते हैं, वे मछली पकड़ रहे हैं, दूसरी तरफ अपने जाल डालते हैं, और वे मछलियाँ पकड़ते हैं। यीशु उन्हें गलील की झील के किनारे शिक्षा देते हैं। गलील की झील, गलील की सेवकाई, और यीशु का नासरत के आराधनालय में जाना और वहाँ उन्हें लगभग एक चट्टान से नीचे फेंक देना, ये सब जॉन में नहीं पाया जाता है - वे सभी गलील की कहानियाँ। जॉन मुख्य रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि यीशु कब यहूदिया में आते हैं। इसलिए यहाँ एक बहुत ही यहूदी प्रकार का ध्यान है, जब यीशु यरूशलेम और यहूदिया से आ रहे हैं या वापस आ रहे हैं।

### सी. जॉन का पैशन वीक पर ध्यान [10:44-12:45]

**बी: संयुक्त सीई; 10:44-18:22; जुनून, मैं हूँ, पिता/पुत्र**

यूहन्ना में मसीह के जुनून के सप्ताह पर भी बहुत अधिक ध्यान दिया गया है। यह देखना दिलचस्प

है कि यूहन्ना का कितना हिस्सा मसीह के इस जुनून के सप्ताह पर केंद्रित है, यूहन्ना के सुसमाचार का अधिकांश भाग मसीह के अंतिम सप्ताह पर केंद्रित है। मसीह के अंतिम सप्ताह में यूहन्ना की पुस्तक का एक बड़ा हिस्सा जुनून के सप्ताह पर केंद्रित है।

कुछ लोग इस पर मेल गिब्सन की फिल्म का उल्लेख करते हैं, जिसका नाम है "द पैशन", जो एक दिलचस्प चित्रण है, और शायद वास्तव में हिंसा पर काफी यथार्थवादी है, बिल्कुल भी अतिशयोक्ति नहीं। जब किसी व्यक्ति को विशेष रूप से यीशु के सामने पीटा जाता था, तो क्या होता था और जो वर्णन दिए गए हैं, जिसमें सैनिकों ने उसका मजाक उड़ाया था। अक्सर यहूदी, वे हमेशा 39 कोड़े मारते थे, न कि 40 कोड़े क्योंकि अगर यह 40 हो जाता और आप व्यक्ति को मार देते, तो यह बुरा होता, इसलिए वे हमेशा थोड़ा पीछे हट जाते। लेकिन यह आपको दिखाता है कि वे आपको आपकी जान के एक इंच के भीतर मारते हैं। इसलिए जुनून के सप्ताह और यीशु की पीड़ा का वर्णन जॉन की पुस्तक में कहीं और से अधिक वर्णित है। वह यहूदी मंत्रालय, यरूशलेम पर ध्यान केंद्रित करता है, और फिर वह मसीह के इस अंतिम सप्ताह पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि केवल अंतिम सप्ताह, मसीह के जीवन का अंतिम दिन। आप जॉन 13 से जॉन 19 तक, छह अध्यायों, पुस्तक के अंत की ओर देखेंगे, यह एक बड़ा हिस्सा है। छह अध्याय हैं। वहाँ बहुत बड़ा हिस्सा है, मसीह के जीवन के अंतिम दिन, और गेथसेमेन जाना, गिरफ्तारी और मुकदमा, यहूदा का विश्वासघात, पतरस का इनकार और ऐसी ही अन्य बातें। मसीह के अंतिम दिन पर, जो दिलचस्प है क्योंकि आपके पास जॉन की पूरी किताब है, वहाँ 21 अध्याय हैं, और आपके पास मसीह के अंतिम दिन पर उनमें से छह अध्याय हैं, इसलिए यह बहुत केंद्रित है।

### **डी । यीशु "मैं हूँ" कथनों के माध्यम से सिखाता है [12:45-15:55]**

अब। हमने उल्लेख किया है कि जॉन का सुसमाचार मुख्यतः यहूदिया में होता है, और इसलिए यह गलील के मंत्रालय के विपरीत यहूदी धर्म पर केंद्रित है। यहाँ एक बात है जो मुझे दिलचस्प लगती है और वह यह है कि यीशु दृष्टांतों में शिक्षा नहीं देते हैं, लेकिन वे शिक्षा देते हैं, और यह जॉन के लिए अद्वितीय है, जॉन ने यीशु को शिक्षा देते हुए दिखाया है, यह दृष्टांतों में नहीं है, स्वर्ग का राज्य सरसों के बीज की तरह है जो बड़ा पौधा बन जाता है। नहीं, जॉन ऐसा नहीं करता है। जॉन

"मैं हूँ" कथनों का उपयोग करता है। एगो *ईमी*, "मैं हूँ" कथन हैं। तो आपको ये सात "मैं हूँ" कथन मिलते हैं और फिर यीशु इन "मैं हूँ" कथनों से क्या मतलब रखते हैं, इसे विकसित करते हैं। तो, उदाहरण के लिए, मैं इनमें से कुछ "मैं हूँ" कथनों को सूचीबद्ध करता हूँ। फिर से, यीशु दृष्टांतों में शिक्षा नहीं दे रहे हैं। जॉन में कोई दृष्टांत नहीं है। लेकिन वे इन "मैं हूँ" कथनों के माध्यम से शिक्षा देते हैं। अध्याय 6:35 में "मैं जीवन की रोटी हूँ"। 8:12 में, "मैं जगत की ज्योति हूँ"। 10 में एक बहुत प्रसिद्ध है, "मैं द्वार हूँ"। और फिर 10 में भी, "मैं हूँ," और इसके लिए, कई चित्र हैं जो इसका वर्णन करते हैं: "मैं अच्छा चरवाहा हूँ"। यह यीशु को अच्छे चरवाहे के रूप में चित्रित करता है जो अपनी भेड़ों की देखभाल करता है। मैं अच्छा चरवाहा हूँ। यहाँ एक है जो प्रसिद्ध है, यह लाज़र की कहानी के दौरान आता है: लाज़र। "मैं पुनरुत्थान हूँ"। मैं पुनरुत्थान हूँ। फिर यहाँ एक है जिससे आप सभी परिचित हैं क्योंकि हमने इसे स्मृति पद में किया था, "मैं ही मार्ग सत्य और जीवन हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता।" यह यीशु का एक बहुत ही मजबूत बयान है। यह बहुत ही बहिष्कारवादी बयान है। हमारी संस्कृति को किसी भी ऐसी चीज़ से परेशानी होती है जो बहिष्कारवादी हो। लेकिन "मैं ही मार्ग सत्य और जीवन हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता," यीशु ने कहा, यूहन्ना 14:6। आप सभी ने इसे याद कर लिया। "मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो," अध्याय 15:5। तो ये विभिन्न "मैं हूँ" कथन, "मैं जीवन की रोटी हूँ," "मैं प्रकाश हूँ," विभिन्न कथन जो यीशु ने कहा "मैं हूँ" और मुझे नहीं लगता कि आप इसे भी अनदेखा कर सकते हैं। मुझे इसमें पुराने नियम की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

अब, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वह यहाँ पुराने नियम का हवाला दे रहा है, लेकिन मैं जलती हुई झाड़ी और मूसा और निर्गमन 3:14 से यह प्रतिध्वनि सुनता हूँ। "मैं हूँ जो मैं हूँ।" यीशु इस *ईगो ईमी का उपयोग करता है*, ग्रीक में, "मैं हूँ," और यहाँ तक कि कुछ फरीसियों के समय में, जब यीशु कहते हैं "मैं हूँ" तो वास्तव में प्रतिक्रिया होती है। मुझे लगता है कि यह भगवान के इस सबसे पवित्र नाम, यहोवा, या याहवे, मैं हूँ जो मैं हूँ, जलती हुई झाड़ी से वापस आ रहा है। इस तरह के कुछ ओवरटोन, या बस इस तरह के पवित्रशास्त्र की प्रतिध्वनि मुझे विश्वास है कि यहाँ पाई जाती है।

## ई. पवित्र आत्मा और पिता/पुत्र संबंध [15:55-18:22]

अब, जॉन ने जो दूसरी बात की है, वह यह है कि वह पवित्र आत्मा के आगमन का वर्णन करता है। मैं पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में और बात करने जा रहा हूँ, जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रवेश करेंगे, और उसके कुछ निहितार्थों के बारे में, लेकिन पवित्र आत्मा के आगमन का वर्णन वह इस प्रकार करता है कि यीशु कहता है कि वह जाने वाला है, और पिता आत्मा को भेजने वाला है। मैं किंग जेम्स संस्करण का उपयोग करूँगा, और मैं किंग जेम्स संस्करण का उपयोग करूँगा क्योंकि जब मैं एक युवा व्यक्ति था, तब मेरा दिमाग किंग जेम्स में ही लगा हुआ था। "मैं दिलासा देने वाले को भेजूँगा।" और इसलिए यह दिलासा देने वाला, ग्रीक में *पैराक्लीट* है। *पैरा-* *पैरा* जैसे पैरा-चर्च संगठन वह है जो *क्लेट के साथ आता है* जिसका मूल रूप से अर्थ है "बुलाया गया।" तो *पैराक्लीट* का अर्थ है "साथ में बुलाया गया।" तो साथ में बुलाया गया, और अब मुझे व्युत्पत्ति विज्ञान से नफरत है और वास्तव में संदर्भ व्युत्पत्ति विज्ञान, या किसी शब्द के इतिहास पर हावी हो जाता है। आपको शब्द के उपयोग और संदर्भ को समझने की आवश्यकता है न कि इसकी व्युत्पत्ति, इसके इतिहास को। लेकिन जब आप इसे तोड़ते हैं तो यह हमें पृष्ठभूमि दे सकता है।

" जो साथ में बुलाया जाता है," लेकिन वह कौन है? यह *पैराक्लीट निकला* - लेकिन इस शब्द का क्या अर्थ है? जब आप पाते हैं कि इसका अर्थ कुछ है तो यह वकील की तरह है। जिसे साथ में बुलाया जाता है वह बचाव पक्ष का वकील होता है, या शायद, इसे दूसरे तरीके से कहें तो, और बेहतर होगा कि वह "वकील" हो। दूसरे शब्दों में, पवित्र आत्मा हमारे लिए पिता के पास एक वकील के रूप में आने वाला है। तो पवित्र आत्मा यह *पैराक्लीट* है। उस शब्द का वास्तविक अर्थ सात्वना देने वाला नहीं है, मुझे लगता है कि यह उस तरह से छूट गया है। यह एक वकील, एक बचाव पक्ष के वकील का विचार है, जो आपकी मदद करने के लिए साथ आता है। इसका अक्सर कानूनी संदर्भ में उपयोग किया जाता है। तो पिता/पुत्र के रिश्ते का हमने उल्लेख किया, यूहन्ना अध्याय 17 मसीह की महान महायाजकीय प्रार्थना है। तो आप देखते हैं कि पुत्र पिता से प्रार्थना कर रहा है, और यह अंतरंगता है। यह एक सुंदर प्रार्थना है, और आप यीशु के हृदय में देख सकते हैं, जैसे वह पिता से प्रार्थना करता है, और वह हमारे लिए प्रार्थना करता है और कहता है, मैं चाहता हूँ कि वे मेरी महिमा देखें जो मैंने दुनिया की नींव से पहले तुम्हारे साथ की थी, कि वे एक हो जाएँ, जैसे हम एक



हैं, और इस तरह की बातें। यह एक अद्भुत प्रार्थना है। यह यीशु की उच्च पुरोहित प्रार्थना है। यहाँ आपके पास पिता और पुत्र हैं जहाँ पुत्र पिता और पुत्र के बीच इस अंतरंग चर्चा में पिता से प्रार्थना कर रहा है। यह बहुत सुंदर है। यह पवित्रशास्त्र में उन अविश्वसनीय प्रार्थनाओं में से एक है।

**एफ. जॉन के सामान्य वाक्यांश: सच में, *अगापे*[प्रेम], और *लोगोस*[शब्द] [18:22-22:44]**

**सी: संयुक्त एफजी; 18:22-25:07; जॉन्स स्टाइल**

अब, हम जॉन के कुछ खास शब्दों के साथ इसे समाप्त करेंगे। जब भी मैं ग्रीक पढ़ाता हूँ जो हर साल गॉर्डन कॉलेज में होता है, मैं हमेशा उन्हें 1 जॉन पढ़ने के लिए कहता हूँ, फिर हम आमतौर पर जॉन और रहस्योद्घाटन पर जाते हैं और मैं चाहता हूँ कि वे जोहानिन शब्दावली से परिचित हो जाएँ। और यह बहुत दिलचस्प है, जॉन इन सूत्रबद्ध शब्दों को दोहराता हुआ प्रतीत होता है जो वह कहता है। वास्तव में अगर मैं आपसे कहूँ, आप में से कुछ लोग किंग जेम्स वर्शन को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं, "सचमुच, सचमुच," "सचमुच, मैं तुमसे कहता हूँ," आप जानते हैं, सचमुच जॉन की पुस्तक से आया है। इसका अर्थ है "आमीन, आमीन; सच में मैं तुमसे कहता हूँ," और वह "सचमुच, सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ," यह जॉन से आता है। यह उनके सूत्रों में से एक है जिसे उन्होंने चुना है, और जॉन के पास ये मुख्य शब्द हैं। जॉन मुख्य शब्दों और वाक्यांशों और इस तरह के साहित्यिक छोटे-छोटे सूत्रों का उपयोग करता है जो संभवतः, कुछ मौखिक तरीकों को दर्शाते हैं कि परमेश्वर का वचन हमारे पास कैसे आया, जहाँ ये वाक्यांश स्टीरियोटाइप वाक्यांश होंगे जो मौखिक तरीकों से चीजों को याद रखने और उन्हें तब ले जाने के लिए उपयोग किए जाते हैं जब जरूरी नहीं कि चीजें लिखी गई हों। इसलिए जॉन इन स्टीरियोटाइपिक सूत्रों को उठाता है और इसका उपयोग करता है "सचमुच, सच में" या "सच में, सच में मैं तुमसे कहता हूँ।"

वह प्रिय शिष्य है, इसलिए वह बड़े पैमाने पर इस शब्द *अगापे*[प्रेम] को उठाता है। और इसलिए 1 यूहन्ना में विशेष रूप से, आपको यह मिलता है लेकिन आपको यह सुसमाचार में भी मिलता है। अधिकांश लोग जानते हैं कि ग्रीक में प्रेम के लिए कई शब्द हैं, इसके विपरीत हिब्रू में, जहाँ हिब्रू में प्रेम के लिए एक शब्द है। ग्रीक में *अगापे*[आत्म-बलिदान], *फिलियो*, भाईचारे का प्यार, *स्टोर्ज* और *इरोस* हैं। *इरोस* अधिक भावुक प्रेम है। मुझे लगता है कि कभी-कभी लोगों ने उन्हें

अलग कर दिया है। उन्होंने *अगापे* और *इरोस* और *फिलियो* को बहुत दूर से अलग कर दिया है। मुझे लगता है कि उन शब्दों में कुछ ओवरलैप है जो मुझे लगता है कि आपको प्यार के लिए उन चार शब्दों के साथ वास्तव में सावधान रहना होगा। हर कोई अंतर देखने की कोशिश कर रहा है लेकिन ओवरलैप प्रतीत होता है और यही कारण है कि उन सभी का एक बिंदु पर "प्रेम" अनुवाद किया गया है लेकिन स्पष्ट रूप से प्रेम के विभिन्न अर्थ हैं। इसलिए जॉन इस शब्द *अगापे का उपयोग करता है*, और यह उसके लिए एक बड़ा शब्द है, और यह आत्म-बलिदान प्रकार का प्रेम है और यह वास्तव में महत्वपूर्ण है।

"शुरू में वचन [ *लोगो* ] था, और वचन [ *लोगो* ] परमेश्वर के साथ था और वचन [ *लोगो* ] परमेश्वर था।" *लोगोस* का मतलब है "शब्द।" फिर यूहन्ना ने मसीह को इस *लोगोस* के रूप में लेबल किया। लोग इसे पढ़ने की कोशिश करते हैं और शायद सही भी है, यह *लोगोस* एक प्रकार का ब्रह्मांडीय बल है, ब्रह्मांड का आयोजन सिद्धांत है और इसमें ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाम ब्रह्मांडीय अराजकता का विचार है। आपको बहुत सी प्राचीन निकट पूर्वी धार्मिक संरचनाएं मिलेंगी जिनमें आपको व्यवस्था और अराजकता के बीच यह लड़ाई मिलती है। इसलिए यीशु को *लोगोस*, परमेश्वर का वचन कहा जाता है। मुझे भी लगता है कि *लोगोस*, परमेश्वर के वचन के साथ एक प्रकार का दोहरा अर्थ या तिहरा अर्थ है: व्यक्ति की अभिव्यक्ति, और देह में परमेश्वर का व्यक्तिगत संचार और स्वयं रहस्योद्घाटन। शायद यह कहने का बेहतर तरीका है। परमेश्वर का रहस्योद्घाटन परमेश्वर के वचन *लोगो से आता है*।

ये जॉन के कुछ पसंदीदा शब्द हैं, और वह उन्हें बार-बार इस्तेमाल करता है। वह वाकई बहुत सारे शब्दों को दोहराता है और वह ऐसा थोड़े-बहुत बदलाव के साथ करता है। वह उन्हें ठीक करता है, लगभग वैसे ही जैसे हमने गॉर्डन में डॉ. ग्रीम बर्ड का व्याख्यान सुना था, लगभग वह इन रूढ़िवादी सूत्रों को लेता है और उन्हें ठीक करता है। और इसलिए यह लगभग एक जैज़ वादक की तरह है जो थोड़ा-बहुत करता है या उसके पास थोड़ा-बहुत आर्पेंगियो है, और वह ऐसा करता है और वह एक ऐसा गाना लेता है जिसे हर कोई पहचानता है और वह कुछ छोटी-छोटी ट्रिली चीजें करता है, और उसे जोड़ता है। जॉन ऐसा करता है, वह इन छोटे-छोटे रूढ़िवादी सूत्रों को लेता है और फिर उन्हें थोड़ा-बहुत बदलता है और आप देख सकते हैं कि यह एक जैज़ वादक की तरह है,

वह एक ही गाना बार-बार बजा रहा है, लेकिन वह हर बार इसे थोड़ा-बहुत बदलकर पाठकों के लिए थोड़ा अलग बना रहा है।

### **जी. रिच कंट्रास्ट्स और वह शिष्य जिससे यीशु प्रेम करता था [22:44-25:07]**

आखिरी बात यह है कि जॉन विरोधाभासों में समृद्ध है। जॉन में प्रकाश और अंधकार एक बड़ी चीज है। फिर से, बाद में, दूसरी शताब्दी में आपको इस ज्ञानवाद का और अधिक पता चलेगा, और प्रकाश और अंधकार के बीच इस बड़े विरोधाभास को और अधिक देखने को मिलेगा। इसलिए कुछ लोग कुछ प्रोटो-ज्ञानवादी तरह की प्रतिक्रिया देखते हैं, जहाँ जॉन, वह इस प्रकाश और अंधकार के विरोधाभास को उठाता है। वैसे, हम आधुनिक चीजों के संदर्भ में भी प्रकाश और अंधकार का उपयोग करते हैं, मैंने अभी डार्थ वाडर की यह तस्वीर देखी। और आपको प्रकाश की शक्तियाँ और लाइटसेबर और ऐसी ही चीजें मिलती हैं। तो आपके पास प्रकाश और अंधकार के बीच यह संघर्ष है और यह लुकास की कुछ फिल्मों, स्टार वार्स में भी मौजूद है, जो बहुत प्रसिद्ध रही हैं। इसलिए, जॉन उस प्रकाश और अंधकार रूपांकन को उठाता है।

तो, और फिर अंत में, मैं बस यीशु के बारे में बात खत्म करना चाहता था, जब यह शिष्य यह किताब लिखता है, तो उसे एहसास होता है कि वह एक है, वह वह शिष्य है जिसे यीशु प्यार करता था। इसलिए यीशु के बारे में उस व्यक्ति से नज़रिया पाना बहुत अच्छा है जिसे यीशु ने बहुत महत्व दिया। वह खुद को इस तरह से पहचानता है: मैं वह हूँ जिसे यीशु प्यार करता था; और यही वह आधार था जिस पर वह खुद को देखता था। कुछ मायनों में यह होना चाहिए कि हम खुद को कैसे देखते हैं। जबकि जीवन में बहुत से लोग पूछते हैं: प्यार क्या है? हर कोई हर किसी से प्यार चूसने की कोशिश कर रहा है और दूसरे लोगों को मुझसे प्यार करने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रहा है। एक ईसाई के रूप में हम महसूस करते हैं कि हमने प्यार का सबसे बड़ा प्रदर्शन किया है, उसने हमारी खातिर अपना जीवन दिया। इसलिए हमें प्यार किया जाता है और हमें दूसरे लोगों से, दूसरी जगहों से प्यार चूसने की ज़रूरत नहीं है। बल्कि हम वो हो सकते हैं, जो मसीह की तरह दूसरों को प्यार देते हैं, क्योंकि हमारा प्याला भरा हुआ है और बह रहा है। क्योंकि मसीह हमें प्यार करते हैं और इसलिए हम भरे हुए हैं और हम बिना कुछ बदले की कोशिश किए दूसरे लोगों से

प्यार कर सकते हैं। मैं तुमसे प्यार करने जा रहा हूँ बिना बदले में प्यार पाए। हम स्वार्थी होने के बजाय निस्वार्थ भाव से जी सकते हैं। आत्ममुग्धता के बजाय, जो खुद पर केंद्रित है, हम दूसरों पर केंद्रित हो सकते हैं। तो, वैसे भी, जॉन वह शिष्य है जिसे यीशु ने जॉन की पुस्तक में प्यार किया था।

### **एच. प्रेरितों के काम की ओर स्थानांतरण [25:07-28:57]**

#### **डी: संयुक्त एच.जे.; 25:07-36:03; प्रेरितों के काम का परिचय और इसकी संरचना**

और अब हम एक बहुत बड़ा बदलाव करने के लिए तैयार हैं। अब तक इस कोर्स में हमने यीशु के बारे में बात करते हुए कोर्स का एक अच्छा हिस्सा बिताया है। यह आंशिक रूप से मेरा पूर्वाग्रह है, मैं इससे दूर नहीं हो सकता। जब भी मैं पुराने नियम के अध्ययन से नए नियम के अध्ययन की ओर बढ़ता हूँ, तो मैं वास्तव में यीशु पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ और यीशु, उनकी शिक्षा, उनके मंत्रालय, यीशु ने लोगों के साथ कैसे व्यवहार किया, के बारे में अच्छी समझ प्राप्त करना चाहता हूँ। यह बताता है कि यीशु ने अपने पिता के साथ कैसे व्यवहार किया, यीशु ने शैतान के साथ कैसे व्यवहार किया, यीशु ने अपने दुश्मनों के साथ कैसे व्यवहार किया। आप इन सभी अलग-अलग परिदृश्यों में यीशु को देख सकते हैं। यही कारण है कि हमने नए नियम में यीशु पर ध्यान केंद्रित करते हुए इतना लंबा समय बिताया है, मुझे लगता है कि यीशु ही ध्यान का केंद्र हैं और इसलिए मैं मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन, गॉस्पेल, सिनॉटिक गॉस्पेल और जॉन पर काफी समय बिताना चाहता हूँ। लेकिन अब, यीशु मर चुका है, वह फिर से जी उठा है, वह कब्र से बाहर आ चुका है, और अब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक की ओर जा रहे हैं। प्रेरितों के काम के साथ, सब कुछ बदल जाता है। प्रेरितों के काम के साथ, यह अब यीशु नहीं है, जो गलील की झील के किनारे रहता और चलता है और चर्च और सुसमाचार का प्रसार करता है। वास्तव में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, आपको अब्राहम की वाचा देखने को मिलती है। अब्राहम के साथ वाचा को याद करें, जहाँ परमेश्वर ने उससे वादा किया था जैसा कि हम अपनी बाइबल में करते हैं- रोबिक्स की बात, भूमि, बीज और कि उसके वंशज पूरी पृथ्वी के लिए एक आशीर्वाद होंगे। और अब आप देख सकते हैं कि वह आशीर्वाद यीशु और उसके बारह शिष्यों में कैसे पूरा होने जा रहा है - और यह कैसे पूरी दुनिया में फैलने जा रहा है। तो, प्रेरितों के काम की पुस्तक यरूशलेम से बाहर जाने वाले

शिष्यों के उस तरह के विस्फोट का वर्णन करने जा रही है। यीशु मृतकों में से जी उठेंगे, हम इसे पुनरुत्थान कहते हैं, और तीसरे दिन वह जीवन में वापस आए और जी उठे। फिर लगभग चालीस दिन बाद, जब वह अपने शिष्यों के साथ था, और विभिन्न लोग उसे देखते हैं, और उसके बारह शिष्य उसे देखते हैं, और महिलाएँ उसे देखती हैं। वैसे, यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बिंदु है, जिसे डॉ. ह्यूजेनबर्गर ने ईस्टर के दिन पार्क स्ट्रीट चर्च में बताया था। मृतकों में से जी उठने के बाद यीशु को देखने वाले पहले लोग कौन थे? गवाही देने वाले पहले लोग कौन थे? पुनरुत्थान के गवाह कौन थे? ये महिलाएँ, मरियम और महिलाएँ हैं। तो महिलाएँ, पहली "प्रेरित" या भेजी गई हैं। ये महिलाएँ ही हैं जो प्रेरितों के पास जाती हैं, वह चला गया है, वह जी उठा है। और यीशु मरियम मगदलीनी और इन अन्य लोगों को दिखाई दिए। ये महिलाएँ ही थीं और यह दिलचस्प है कि उस संस्कृति में एक महिला को आम तौर पर अदालत में गवाह बनने की अनुमति नहीं थी, और इसलिए एक महिला की गवाही अमान्य थी। फिर भी, यदि आप सुसमाचार लिख रहे होते, पुनरुत्थान को मान्य करने का प्रयास कर रहे होते, तो आप पुरुषों से कहानी कहलवाते, लेकिन पवित्रशास्त्र में जो किया गया है, उसमें महिलाओं द्वारा कहानियाँ बताई गई हैं, जो उस समय मृतकों के पुनरुत्थान को मान्य करने का तरीका नहीं है। यह केवल यह दर्शाता है कि शास्त्र हमें सच्चा सत्य दे रहे हैं, कि शास्त्र हमें तथ्यात्मक इतिहास दे रहे हैं, यह वास्तव में हुआ था। ऐसा नहीं है कि वे इसे गढ़ रहे हैं, यह ऐसा नहीं है कि वे इस तरह या उस तरह से घुमा रहे हैं, वे सच्ची सच्चाई का वर्णन कर रहे हैं, जो वास्तव में हुआ था। इसलिए महिलाओं की गवाही सबसे पहले आती है, भले ही वह संस्कृति के विपरीत हो, और इस तरह की छोटी-छोटी बातें सामने आती रहती हैं जो यह संकेत देती हैं कि यह गढ़ा हुआ सत्य नहीं है, कि वे केवल इतिहास बता रहे हैं, जो वास्तव में हुआ था। अब वे सब कुछ नहीं बताते हैं जो हुआ था और हम इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं।

## **I. प्रेरितों के काम का परिचय और इसका विहित महत्व [28:57-33:26]**

तो अब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक पर जा रहे हैं, और आप देखते हैं कि यीशु क्रूस पर मरते हैं, तीन दिन बाद वे मृतकों में से जी उठते हैं, वे अपने शिष्यों के साथ हैं, वे इन महिलाओं को दिखाई देते हैं, वे इम्मांस रोड पर जा रहे दो लोगों को दिखाई देते हैं, उन्हें एक ही समय में 500

लोगों ने देखा, उन्हें एक ही समय में ग्यारह शिष्यों ने देखा। उन्हें कई समूहों ने देखा और कई समूहों ने अलग-अलग जगहों पर भी देखा। वे हमेशा एक ही जगह पर नहीं दिखाई देते। वे यरूशलेम के बाहर इमॉस के रास्ते पर हैं, उन्हें कई, कई अलग-अलग लोगों ने कई, कई अलग-अलग संदर्भों में देखा और अंत में 500 लोगों ने उन्हें देखा। फिर आपके पास वह है जिसे "स्वर्गारोहण" कहा जाता है। आपके पास वह है जिसे "पुनरुत्थान" कहा जाता है, जो मृतकों में से जी उठना है। स्वर्गारोहण लगभग 40 दिनों के बाद होता है। यीशु बादल पर चढ़ते हैं और उड़ जाते हैं। वे कहाँ से निकलते हैं, अंदाज़ा लगाइए? जैतून के पहाड़ से। और आप में से कुछ लोग जेरूसलम में खो जाने के कार्यक्रम में गए हैं, वे जानते हैं कि यदि आप जैतून के पहाड़ की चोटी पर जाते हैं और यदि आप शीर्ष पर जाते हैं तो वहाँ एक चैपल है और चैपल को स्वर्गारोहण का चैपल कहा जाता है। इसमें यीशु के पदचिह्न हैं जहाँ से वे स्वर्ग में चले गए थे। अब, आप इसे खरीद सकते हैं, व्यक्ति इसे देखने के लिए कुछ पैसे चाहता है और इस तरह की चीजें, इसलिए यह काफी हद तक फर्जी है, बेशक, लेकिन यीशु जैतून के पहाड़ से ऊपर गए थे। इसमें कहा गया है कि जब वे वापस आएंगे तो वे जैतून के पहाड़ पर उसी तरह वापस आएंगे जिस तरह से आप उन्हें जाते हुए देखते हैं। और इसलिए बहुत से लोग जैतून के पहाड़ पर दफन होना चाहते हैं क्योंकि यहीं पर यीशु वापस आने वाले हैं। तो, चलिए प्रेरितों के काम की पुस्तक पर चलते हैं।

अब प्रेरितों के काम की पुस्तक, जैसा कि हमने कहा कि यह एक बड़ा बदलाव है। प्रेरितों के काम की पुस्तक मूल रूप से चर्च के आगे बढ़ने के बारे में है, ये सरल वाक्यांश हैं, लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक, प्रेरितों के काम, जैसा कि इसे कहा जाता है। हमारे पास यहाँ क्या है? प्रेरितों के काम की पुस्तक बाइबल के बाकी हिस्सों, नए नियम के बाकी हिस्सों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। हमारे पास मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन हैं जो हमें यीशु के जीवन के बारे में बताते हैं और प्रेरितों के काम की पुस्तक मूल रूप से हमें इतिहास देती है, हमारे पास रोमियों, कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिपियों और कुलुस्सियों जैसी कुछ पत्रियाँ होंगी। प्रेरितों के काम की पुस्तक वह इतिहास प्रदान करने जा रही है जो इन पत्रों को लिखे जाने के कारणों को रेखांकित करती है। यदि आप डॉ. डेव मैथ्यूसन के व्याख्यानो को देखें, जो शानदार हैं, वे बार-बार आते रहते हैं और प्रत्येक पत्र, पत्र का अवसर क्या था, वह कौन सी समस्या थी जिसके कारण प्रेरित पॉल या जेम्स या किसी

और को लिखना पड़ा? दूसरे शब्दों में कहें तो वह कौन सी समस्या थी जिसके कारण उन्हें लिखना पड़ा? और पत्र उस समस्या का उत्तर कैसे देता है? प्रेरितों के काम की पुस्तक आपको प्रेरितों के अधीन इतिहास बताएगी। इसलिए, ईमानदारी से कहें तो, हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ने में बहुत समय लगाते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें पत्रों के लिए ऐतिहासिक रूपरेखा प्रदान करती है और इसलिए हमें प्रेरितों के काम को अच्छी तरह से सीखना चाहिए। जब हम पत्रों को पढ़ते हैं तो हम इसे अच्छी तरह से सीखते हैं। पत्रों के पीछे जीवन की ऐतिहासिक स्थिति क्या थी? इसलिए, जब आप प्रेरितों के काम का अध्ययन करने जाते हैं तो आपको इन अन्य पत्रों के पीछे का इतिहास मिलता है।

अब, आइए प्रेरितों के काम की पुस्तक के इस महत्वपूर्ण भाग पर एक और बात पर चर्चा करें। पौलुस के कुछ पत्र जैसे कि उसके पादरी पत्र प्रेरितों के काम के बाद आएंगे और इसलिए ऐसा लगता है कि पौलुस, अंत में हम यह देखने जा रहे हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक रोम की जेल में पौलुस के साथ समाप्त होती है। फिर, ईमानदारी से कहें तो, यह बहुत अचानक समाप्त होती है। प्रेरितों के काम की पुस्तक अचानक समाप्त होती है, हमें कभी नहीं बताया गया कि प्रेरित पौलुस के साथ क्या हुआ। जैसे ही यह समाप्त होती है, वह कैसर के सामने अदालत में जाता है। हम नहीं जानते कि उसका क्या हुआ, प्रेरितों के काम की पुस्तक उस बिंदु पर रुक जाती है। फिर हमारे पास 2 तीमुथियुस और कुछ अन्य पत्र हैं जो पौलुस ने लिखे थे जो कैसर के सामने उस मुकदमे के बाद से आए प्रतीत होते हैं। तो कुछ पादरी पत्र हैं और, निश्चित रूप से, रहस्योद्घाटन की पुस्तक, हम समझते हैं कि यह जॉन द्वारा बहुत बाद में लिखी गई है, और यह 98 ईस्वी या उसके आसपास के आसपास कैनन को बंद कर रही है।

### **जे. प्रेरितों के काम की पुस्तक की संरचना: सुसमाचार का विस्तार [33:26-36:03]**

अब आइए प्रेरितों के काम की पुस्तक की संरचना पर नज़र डालें। प्रेरितों के काम की पुस्तक का मुख्य पद प्रेरितों के काम 1:8 है। और यह पद फिर से, हमने इस पाठ्यक्रम के लिए याद किया है, लेकिन प्रेरितों के काम 1:8, यह आपको पुस्तक का संपूर्ण प्रवाह और संरचना देता है, मुझे लगता है कि संक्षेप में: "लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य प्राप्त

करोगे।" तो पवित्र आत्मा एक बड़ा विषय होने जा रहा है। वैसे क्या आपको लूका की पुस्तक में वापस याद है? लूका का एक बड़ा विषय क्या था? लूका पिन्तेकुस्त से पहले था, यह यीशु के साथ वापस आता है। लूका ने पवित्र आत्मा को उठाया। पवित्र आत्मा तब मौजूद थी जब मरियम का बच्चा उसके गर्भ में उछल रहा था, जब वह जकर्याह और एलिजाबेथ से बात कर रही थी और आत्मा लूका की पुस्तक में उन शुरुआती लोगों में विभिन्न लोगों पर आती है। फिर, लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में भी पवित्र आत्मा को उठाया। ऐसा लगता है कि लूका ही वह लेखक है जो पवित्र आत्मा को बहुत अधिक उठाता है। "लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे और मेरे गवाह होगे" और अब ये गवाह, और यह यरूशलेम [केंद्र] से यहूदिया तक भौगोलिक आंदोलन का वर्णन करता है, यहूदिया, सामरिया के आदिवासी क्षेत्र तक फैलता है, सामरियों और पृथ्वी के छोर तक जाता है। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह अब्राहम की वाचा के पूरा होने का वर्णन करता है, कि अब्राहम पूरी पृथ्वी के लिए एक आशीर्वाद होगा। अब्राहम की वाचा उत्पत्ति 12 और उत्पत्ति में अन्य स्थानों से वापस आती है। तो हमारे पास यरूशलेम से यहूदिया, सामरिया अध्याय हैं, और ये अध्याय हैं, यरूशलेम और यहूदिया प्रेरितों के काम के अध्याय 1-7 हैं, यहूदिया से सामरिया, अध्याय 8-12, और दुनिया के सबसे बाहरी हिस्सों तक, मोटे तौर पर यह खंड पॉल की तीन मिशनरी यात्राओं, अध्याय 13-28 में है। तो अध्याय 13-28 में, हम पॉल को तीन मिशनरी यात्राओं पर जाते हुए देखेंगे। प्रेरित पौलुस की तीन मिशनरी यात्राओं के बाद, पौलुस को यरूशलेम में कैद कर लिया जाएगा और फिर मूल रूप से उन तीन मिशनरी यात्राओं के बाद, उसे फिलिस्तीन [कैसरिया] में दो साल की कैद होगी। फिर उसे रोम भेजा जाएगा और फिर रोम तक की यह लंबी यात्रा करनी होगी और जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो जाएगा और अंत में वह रोम तक पहुँच जाएगा। यह यहीं समाप्त होगा। पुस्तक रोम में कैद पौलुस के साथ यहीं समाप्त होगी। तो यह पुस्तक की एक तरह की मैक्रोस्ट्रक्चर है।

**के. वैकल्पिक संरचना: एक मिशनरी और उनका क्षेत्र [36:03-43:11]**

**ई. संयुक्त केएल; 36:03-49:33; मिशनरी और फील्ड, अधिनियमों से छूट**

अब इसे देखने का एक और तरीका है, संरचना को देखने का एक और तरीका है। यहाँ एक



मिशनरी है, यहाँ एक मिशन क्षेत्र है, आपको अध्यायों का आधार वहाँ मिलता है जहाँ यह घटित होता है। अब सबसे पहले, हमारे पास पीटर और स्टीफन हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक के शुरुआती अध्यायों में जो कि मुख्य रूप से पीटर द्वारा हावी हैं। पीटर और स्टीफन, स्टीफन पर एक बड़ा अध्याय है, अध्याय 7 में स्टीफन को पत्थर मारने का वर्णन है, और अध्याय 6 स्टीफन के साथ परिचय है। यहाँ आपको यहूदिया मिलता है, मुख्य रूप से पीटर और स्टीफन जो कि यहूदिया पर केंद्रित है। संचालन का आधार यरूशलेम है, यह बहुत यरूशलेम केंद्रित है और प्रारंभिक चर्च में जो होने वाला है वह यह है कि वहाँ उत्पीड़न होने वाला है। इसलिए, यरूशलेम में यह उत्पीड़न होने वाला है, वहाँ उत्पीड़न होने वाला है। जेम्स, जब्दी के बेटे जॉन का भाई था। तो आपके पास जॉन का भाई है, जेम्स शुरुआती चर्च शहीदों में से एक होने जा रहा है, वह जल्दी मरने जा रहा है, स्टीफन शुरुआती शहीदों में से एक होने जा रहा है। स्टीफन को पत्थर मारकर मार दिया जाएगा, और वह पुराने नियम का यह शानदार लंबा उपदेश देगा, जिसमें पुराने नियम का सुंदर वर्णन होगा। एकमात्र समस्या यह है कि इसे छोटा कर दिया गया क्योंकि लोग उससे इतने परेशान हो गए कि उन्होंने पत्थर उठाना शुरू कर दिया और उसे मार डाला। वैसे, इस लंबे सुंदर अध्याय में स्टीफन का शानदार भाषण पुराने नियम की व्याख्या है। फिर, पॉल वहाँ है और पॉल यह देखता है और इसलिए पॉल स्टीफन की मृत्यु का गवाह बनता है। वहाँ एक बहुत लंबा वर्णन है जो संभवतः पॉल द्वारा सुनाया गया है और उसने जो देखा है। अध्याय 8-12 में, आपके पास बरनबास और फिलिप हैं। फिलिप प्रेरितों के काम के अध्याय 8 में इस इथियोपियाई खोजे के साथ जाता है और वह बाहर जाकर इस इथियोपियाई खोजे से मिलने वाला है और वह व्यक्ति बाहर आकर कहता है, "अरे, मुझे नहीं पता कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ," और वह बाहर आने वाला है और एक देवदूत आता है और फिलिप को ले जाता है और उसे वहाँ ले जाता है। इस तरह के सुसमाचार प्रचार में, देवदूत उसे वहाँ ले जाता है और कहता है, "जाओ उस व्यक्ति से बात करो।" तो वह ऊपर जाता है और इस इथियोपियाई खोजे से बात करता है और उसे शास्त्रों की व्याख्या करता है। वह उसे यीशु के बारे में बताता है और वह यशायाह पढ़ रहा है और वह कहता है, "यहाँ क्या हो रहा है?" और इस तरह आपको फिलिप के साथ यशायाह/यीशु का एक बेहतरीन संबंध मिलता है। वह इसलिए भी दिलचस्प है, क्योंकि उसकी चार भविष्यवक्ता बेटियाँ हैं। तो यह बहुत दिलचस्प है कि आपको

पुराने नियम में क्या मिला, आपको याद होगा कि जब हमने डेबोरा और बराक के बारे में बात की थी, तो वह क्या था, न्यायाधीश 4 और 5, और आपके पास डेबोरा और बराक थे और डेबोरा तब इज़राइल की नेता थी, वह एक भविष्यवक्ता थी, और वह एक न्यायाधीश थी। वह लैपिडोथ नाम के एक व्यक्ति से भी विवाहित थी और इसलिए वह एक विवाहित महिला थी जो एक भविष्यवक्ता और एक न्यायाधीश थी और पाठ कहता है कि वह उस समय इज़राइल का नेतृत्व कर रही थी। आपको याद है कि वह उस समय याबिन और हासोर के साथ इज़राइल का नेतृत्व कर रही थी। और क्या होता है कि आपके पास यिर्मयाह के समय में हुल्दा भी है, जो पुराने नियम में एक भविष्यवक्ता थी, और अब आप कहते हैं कि वह पुराना नियम था, पुराने नियम में भविष्यवक्ता थे, मूसा, यशायाह, यहजेकेल और दानियेल और उनके पास भविष्यवक्ता भी थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, फिलिप की चार भविष्यवक्ता बेटियाँ हैं। अब उन्होंने कोई शास्त्र नहीं लिखा है जिसके बारे में हम जानते हैं, लेकिन उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का वचन दिया। उन्होंने परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाया। फिलिप की चार भविष्यवक्ता बेटियाँ थीं जो बाद में आएंगी, चर्च में महिलाओं की भूमिका के बारे में एक बड़ी बहस है और जो भी आपको पसंद है या नापसंद है, आपको उसका हिसाब देना होगा, फिलिप और उनकी चार भविष्यवक्ता बेटियाँ जिन्हें भविष्यवक्ता के रूप में वर्णित किया गया है। उनके पास परमेश्वर का वचन है जैसे कि पुराने नियम में हुल्दा और डेबोरा के पास था।

बरनबास एक महान व्यक्ति है, जाहिर है वह एक लंबा आदमी था और बरनबास का मतलब है *बार* का मतलब है “का बेटा,” *नबास* का मतलब है “सांत्वना।” तो बरनबास का मतलब है “सांत्वना का बेटा।” तो बरनबास एक प्रोत्साहनकर्ता है, और यहाँ गॉर्डन में भी हमारे पास बरनबास समूह हैं और बरनबास समूह क्या करते हैं? वे प्रोत्साहन और उस तरह की चीज़ों के लिए हैं। तो बरनबास एक महान प्रोत्साहनकर्ता होने जा रहा है जब पॉल अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर जाएगा और यह बरनबास ही होगा जो उसके साथ जाएगा। और बरनबास को चर्च द्वारा स्वीकार किया जाता है। पॉल थोड़ा बाहरी व्यक्ति था। मेरा मतलब है, आप कल्पना कर सकते हैं, पॉल ईसाइयों को मार रहा था और फिर पॉल वापस आता है और वह एक प्रेरित होने का दावा करता है और वह एक मिशनरी यात्रा पर जाना चाहता है। तो बरनबास पॉल को समुदाय में आसानी से

शामिल करता है और बरनबास उस तरह का व्यक्ति है। यहूदिया और सामरिया और कुछ चीजें अध्याय 8-12 में यहूदिया तक फैली हुई हैं, और फिर यहाँ अंतिम खंड पॉल है। प्रेरितों के काम की पुस्तक मुख्य रूप से पॉल पर केंद्रित है और आप पीटर, स्टीफन, बरनबास और उन लोगों से हटकर पॉल पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वास्तव में यह पॉलिन फोकस है। पॉल सुसमाचार को तुर्की ले जाता है, और वह एक मिशनरी यात्रा करता है और वह तुर्की के मध्य में एक मिशनरी यात्रा करता है, दूसरी मिशनरी यात्रा पर वह तुर्की से होकर मैसेडोनिया और ग्रीस, एथेंस, कोरिंथ, फिलिप्पी, थेसालोनिका और उन सभी स्थानों पर जाता है जिन्हें आप बाइबल की पुस्तकों से याद करते हैं।

फिर अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर वह इफिसुस की ओर जाता है और इफिसुस में तीन साल बिताता है। और फिर अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के बाद वह यरूशलेम में गरीब लोगों के लिए पैसे इकट्ठा करने जा रहा है। यरूशलेम में अकाल पड़ा है और इसलिए वह मुख्य रूप से ग्रीस और तुर्की के लोगों से पैसे इकट्ठा कर रहा है और फिर वह यरूशलेम में अकाल से निपटने के लिए इस पैसे के साथ यरूशलेम वापस जाता है और यहीं पर पॉल को वहाँ के अंत में जेल में डाल दिया जाता है। तो, प्रेरित पॉल की तीन मिशनरी यात्राएँ हैं--एक, दो, तीन मिशनरी यात्राएँ। फिर वह यरूशलेम वापस जाता है और वापस लौटने पर उसे जेल में डाल दिया जाता है। यह एक तरह से विडंबना है, है न? यहाँ वह यरूशलेम में गरीबों की मदद के लिए पैसे ला रहा है और यहीं पर उसे पकड़ लिया जाता है और जेल में डाल दिया जाता है। आपको लगता है कि वे आभारी होंगे और कहेंगे, "यह आदमी हमारे लोगों की मदद के लिए पैसे ला रहा है।"

पॉल की सभी मिशनरी यात्राओं का मिशनरी आधार यरूशलेम से सीरिया के अन्ताकिया तक चला जाता है। इसलिए अन्ताकिया सीरिया में है और संचालन का आधार उत्तर की ओर चला जाता है क्योंकि यरूशलेम में उत्पीड़न हुआ था और इसलिए संचालन का आधार अन्ताकिया तक चला जाता है। प्रेरितों के काम 13-28 में पॉल की सभी मिशनरी यात्राएँ सीरिया के अन्ताकिया से शुरू होंगी। तो यह पुस्तक की संरचना और प्रेरितों के काम की पुस्तक का व्यापक दायरा है।

## एल. प्रेरितों के काम की पुस्तक में छूट [43:11-49:33]

उन्होंने यहाँ लिखी गई सामग्री का चयन कैसे किया? यहाँ यह दिलचस्प है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई चूकें हैं। कई लोग कहते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रारंभिक चर्च का इतिहास है। लेकिन सच्चाई यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रारंभिक चर्च का व्यापक इतिहास नहीं है। इसलिए, उदाहरण के लिए, कुछ चूकें जो वास्तव में बहुत स्पष्ट हैं, वे हैं गलातियों 1:17 में पॉल के बाद, दमिश्क रोड पर, पॉल दमिश्क रोड पर जाता है और मसीह उसे दिखाई देता है और उसे अंधा कर देता है और वह अपने घोड़े से गिर जाता है, "शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों सता रहे हो।" पॉल नीचे है, "तुम कौन हो?" "मैं यीशु हूँ जिसे तुम सता रहे हो।" इसलिए पॉल दमिश्क के रास्ते पर मसीह को स्वीकार करता है। वह दमिश्क जाता है और फिर तीन साल के लिए, गलातियों 1:17 हमें बताता है, पॉल अरब गया, वापस यरूशलेम नहीं, एंटीओक नहीं। वह अरब गया और जाहिर तौर पर अपने धर्म परिवर्तन के बाद तीन साल तक वहाँ रहा। तो यहाँ आपको पॉल के जीवन का बहुत बड़ा समय मिलेगा जो दर्ज भी नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है, लेकिन हम इसे गलातियों से लेते हैं। तो मैं यहाँ जो सुझाव देने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक एक व्यापक इतिहास नहीं है, इसमें कुछ चीजें छूट गई हैं और उनमें से एक है पॉल के तीन साल। यह अरब में बिताए गए समय के बारे में पूरी तरह से चुप है।

प्रेरित पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा पर मार्क और बरनबास के साथ क्या होता है। पहली मिशनरी यात्रा पर, जॉन मार्क और बरनबास पॉल के साथ जाते हैं। जब दूसरी मिशनरी यात्रा शुरू हो रही थी, तब जॉन मार्क को लेकर बहुत मतभेद था। हमने मार्क की पुस्तक पढ़ते समय इस बारे में बात की थी। पॉल और जॉन मार्क के बीच मतभेद था। बरनबास, जो जॉन मार्क का चाचा है, उसे लेकर साइप्रस वापस चला जाता है और पॉल सीलास को लेकर तुर्की से होते हुए दूसरी मिशनरी यात्रा पर निकल जाता है और फिर मैसेडोनिया और फिर ग्रीस में चला जाता है। लेकिन बरनबास और जॉन मार्क नहीं गए। वे अपनी मिशनरी यात्रा पर वापस साइप्रस चले गए। सबसे दिलचस्प बात यह है कि पहली मिशनरी यात्रा के बाद जॉन मार्क और बरनबास पॉल के साथ कहाँ जा रहे हैं। दूसरी मिशनरी यात्रा में ये लोग नक्शे से गायब हो जाते हैं। आप बरनबास और जॉन मार्क के बारे में

ज़्यादा नहीं सुनते। वे चले गए हैं। इसलिए यह हमें सारी बातें नहीं बताता। उन दो लोगों के साथ क्या हुआ, हमें नहीं पता।

अन्य बारह प्रेरितों के बारे में, आपके पास प्रेरितों के कार्य हैं, लेकिन क्या यह वास्तव में हमें प्रेरितों के कार्यों के बारे में बताता है। यह हमें पीटर के बारे में पहले से बताता है, लेकिन जैसे ही आप अध्याय 13 पर पहुँचते हैं, यह सब पॉल और उसकी तीन मिशनरी यात्राओं और जेल में फेंके जाने के बारे में है। अन्य बारह प्रेरितों का क्या हुआ? खैर, आप कहते हैं, फिलिप को हवाई जहाज से लाया गया और उसे इस इथियोपियाई खोजे की सेवा करनी पड़ी। लेकिन उसके बाद फिलिप का क्या हुआ? आप कुछ नहीं सुनते। फिलिप चला गया।

मेरे लिए एक दिलचस्प बात थॉमस है। हम थॉमस के बारे में कुछ नहीं सुनते। हमने जॉन की किताब से थॉमस के बारे में बात की। ऐसा लगता है कि थॉमस जाहिर तौर पर भारत गया था। अगर आप भारत जाएँ, तो आज भी वहाँ सभी थॉमिस्टिक चर्च हैं, फिर भी यह अधिनियमों की पुस्तक में दर्ज नहीं है। थॉमस के बारे में कुछ भी नहीं है। थॉमस भारत जाता है और जाहिर तौर पर वहाँ सुसमाचार फैलाता है। वहाँ ऐसे चर्च हैं जो थॉमस से जुड़े हैं। इसलिए यह बहुत दिलचस्प है कि अधिनियमों की पुस्तक हमें यह नहीं बताती कि बारह प्रेरितों में से कई के साथ क्या हुआ।

मथायस, वे प्रेरितों के काम अध्याय एक और दो में यहूदा की जगह बारहवें प्रेरित का चयन करने के लिए इतना समय लेते हैं। मथायस का क्या हुआ? हम नहीं जानते कि उसके साथ क्या हुआ। बार्थोमे और कुछ अन्य शिष्यों का क्या हुआ, यह हम नहीं जानते। याकूब के बारे में हम जानते हैं। याकूब, जो यूहन्ना का भाई, ज़ेबेदी का पुत्र था, जल्दी ही मारा गया, लेकिन कई अन्य प्रेरित हैं जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते।

जॉन का क्या हुआ? जॉन शुरुआती अध्यायों में पीटर के साथ घूमता है जॉन और पीटर साथ हैं "मेरे पास चांदी और सोना नहीं है" और वे इस अपंग व्यक्ति को उठाने में मदद करते हैं लेकिन प्रेरितों के काम में जॉन के साथ क्या होता है। जॉन नक्शे से गायब हो जाता है। पीटर के बारे में काफी कुछ है। पीटर द्वारा दिए गए कई भाषण भी हैं लेकिन जॉन के बारे में क्या, लगभग कुछ भी नहीं। इसलिए हम इसे चर्च के इतिहास में अन्य स्थानों से उठाते हैं और हम इसे नए नियम में अन्य स्थानों से उठाते हैं।

मैं बस इतना कहना चाह रहा हूँ कि प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें बारह प्रेरितों और उनके द्वारा सुसमाचार फैलाने तथा प्रत्येक प्रेरित के साथ क्या हुआ, यह बताने के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं देती। हम नहीं जानते कि कई प्रेरितों के साथ क्या हुआ। हमें इसे आरंभिक चर्च और फॉक्स की शहीदों की पुस्तकों तथा अन्य अभिलेखों, कैनन में अन्य स्थानों जैसे कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक से प्राप्त करना होगा, जहाँ यह हमें यूहन्ना के बारे में अधिक बताता है।

यहाँ पॉलिन का ध्यान केंद्रित है। लेकिन फिर आपको पूछना होगा, डॉ. मैथ्यूसन के प्रश्न पर वापस जाएँ, प्रेरितों के काम की पुस्तक क्यों लिखी जा रही है। क्या प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रारंभिक चर्च के इतिहास के रूप में लिखी गई है। मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि इसका एक और विशेष उद्देश्य है। इसका कारण इसके लिखे जाने के अवसर से जुड़ा था और यही कारण है कि रिकॉर्ड किए गए इतिहास का दायरा सीमित हो जाता है। मैं जॉन की पुस्तक के अंत में उस कथन पर वापस आता रहता हूँ। जॉन कहते हैं, "अगर मैं यीशु द्वारा किए गए सभी कार्यों को रिकॉर्ड करूँ, तो पूरी दुनिया में लिखी गई सभी पुस्तकें समाहित नहीं हो सकतीं।" तो आपके पास जो है वह यह है कि इतिहास हमेशा चयनात्मक होता है। जब कोई भी व्यक्ति इतिहास लिखता है, भले ही वह कई खंडों में हो, तो वह हमेशा चयनात्मक होता है, आपको कभी भी पूरी तस्वीर नहीं मिलती। यह इतिहास की प्रकृति का हिस्सा है। तो फिर आपको पूछना होगा कि उन्होंने किस तरह से यह चुना कि उन्होंने किन चीजों को बताने का फैसला किया और किन चीजों को नहीं बताने का फैसला किया। जब आप इतिहास लिखते हैं, तो इसके पीछे कुछ सिद्धांत होते हैं। कुछ चीजें दिमाग में आती हैं और कुछ अन्य चीजें नहीं।

### **एम. प्रेरितों के काम में विभाजनकर्ता के रूप में सारांश कथन [49:33-55:32]**

#### **एफ: एमओ को मिलाएं; 49:33-62:47; यहूदी विरोध**

अब दिलचस्प बात यह है कि बेन विदरिंगटन नामक एक व्यक्ति ने नए नियम में बहुत काम किया है। उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक में सारांशों को उठाया है। इसलिए वह प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ता है और वह देखता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में ये सारांश हैं जिन्हें वह विभाजन के रूप में देखता है। क्या आपको याद है जब हमने पिछले सेमेस्टर में उत्पत्ति की पुस्तक

के बारे में बात की थी कि उत्पत्ति में ये दस *टोलेडोथ* कथन थे: यह आदम का विवरण है, यह शेत का विवरण है, यह नूह का विवरण है, और यह तेरा का विवरण है। यह इस तरह के कोलोफोन या इस सूत्र कथन के साथ उत्पत्ति को तोड़ता है और चीजों को तोड़ता है। तो यह एक तरह की आश्चर्यजनक बात है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में ये सारांश कथन हैं और विदरिंगटन ने जो देखा वह यह है कि वे पाठ को कैसे तोड़ते हैं।

इसलिए, उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2:42 में, पिन्तेकुस्त के बाद, यह कहा गया है, "वे प्रेरितों की शिक्षा और संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लगे रहे। हर कोई विस्मय से भरा हुआ था और प्रेरितों द्वारा कई आश्चर्यकर्म और चमत्कारी चिह्न दिखाए गए थे। सभी विश्वासी एक साथ थे और उनकी हर बात समान थी।" यह प्रेरितों के काम 2:42 है और यह आपको एक सारांश कथन देता है। विदरिंगटन ने जो किया है, जो कि एक तरह से दिलचस्प है, वह यह है कि ये सारांश कथन उस स्रोत के अंत को इंगित करते हैं जिसका उपयोग लूका कर रहा था। अब हम जानते हैं कि लूका ने स्रोतों का उपयोग किया क्योंकि वह हमें लूका 1:1-4 में बताता है। क्या आपको वह याद है? लूका कहता है कि वह प्रत्यक्षदर्शी नहीं था। वह संभवतः प्रेरित पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा तक मसीह को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था जब पौलुस दूसरी मिशनरी यात्रा पर त्रोआस जाता है और जब पौलुस लूका को उठाता है। इसलिए लूका कहता है, "मैंने प्रत्यक्षदर्शियों का साक्षात्कार लिया" लूका हमें बताता है कि उसने प्रत्यक्षदर्शियों का साक्षात्कार लिया और वह "हे परमप्रधान थियोफिलस, तुम्हारे लिए एक व्यवस्थित विवरण" लिखने का प्रयास कर रहा है। इसलिए वह थियोफिलस को लिखता है और वह स्वीकार करता है कि वह प्रत्यक्षदर्शी नहीं है। तो क्या होता है कि वह अलग-अलग स्रोतों का उपयोग कर रहा है। विदरिंगटन जो करता है वह यह है कि ये सारांश कथन दस्तावेजों में बदलाव का संकेत देते हैं। जब ल्यूक सारांश देता है तो ल्यूक कहता है कि मैं उस स्रोत के साथ काम कर चुका हूँ और वह सारांश देता है और उस स्रोत के बारे में थोड़ा सार देता है और फिर वह अगले स्रोत पर चला जाता है। यह एक पेपर लिखने जैसा है और आपके पास 3x5 कार्ड या कुछ और है, OneNote में आप इसे अलग तरीके से करेंगे, लेकिन आप चीजें लिखेंगे और फिर आप एक स्रोत को समाप्त करेंगे और उसे दूर रखेंगे फिर आप अंत में सारांश देंगे और फिर अपने नए स्रोत पर शुरू करेंगे। हालाँकि उसने यह सुझाव दिया है, यह वास्तव में मुझे

संतुष्ट नहीं करता है। मुझे नहीं लगता कि ल्यूक इतना यांत्रिक है कि यह एक स्रोत है और फिर वह दूसरे स्रोत पर स्विच कर रहा है।

हालाँकि, मुझे लगता है कि यह समझना ज़रूरी है कि ये सारांश विभाजक हैं। इसलिए आपको प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखना चाहिए जब आप सारांश कथन पर आते हैं और महसूस करते हैं कि यहाँ कथा में बदलाव है। कुछ बंद हो रहा है और कुछ और खुल रहा है। यह समझना ज़रूरी है कि साहित्यिक संरचना कैसे आगे बढ़ती है। यह एक विधि है जिसे बयानबाज़ी आलोचना कहा जाता है और मुझे लगता है कि अपनी इकाइयों को जानने से इसका कुछ फ़ायदा है। दूसरे शब्दों में, कहानी कब शुरू होती है। लगभग सभी कहानियों में आपको इस तरह की चीज़ मिलती है जहाँ कहानी की शुरुआत एक निश्चित तरीके से होती है। अगर मैं आपसे कहता हूँ "एक बार की बात है," तो आप कहानी के अंत में "एक बार की बात है" नहीं लिखते, आप इसे कहानी की शुरुआत में लिखते हैं। तो आप कहते हैं, "एक बार की बात है" इस तरह से कहानी शुरू होती है, यह एक सूत्रबद्ध शुरुआत है। फिर आम तौर पर कहानी शुरू होती है और आपको अपने सभी पात्रों का परिचय देना होता है, आपको सभी स्थितियों का परिचय देना होता है और फिर चीज़ें चरमोत्कर्ष पर पहुँचती हैं। फिर कहानी के बीच में या अंत में आपको चरमोत्कर्ष मिलता है। तो आपके पास एक शुरुआत, मध्य और अंत है। अंत में जो होता है वह यह है कि विभिन्न पात्रों की कई समस्याएं हल हो जाती हैं। पात्र किसी स्थिति में शामिल होते हैं, किसी तरह की समस्या होती है और फिर समस्या चरमोत्कर्ष की ओर ले जाती है। कहानी के अंत में समस्या किसी तरह से खुद ही हल हो जाएगी। तो फिर वे सभी "हमेशा खुशी से रहेंगे।" अब आप कहानी की शुरुआत "वे सभी हमेशा खुशी से रहेंगे" से नहीं करते हैं, आप इस तरह से निष्कर्ष निकालते हैं। एक कहानी में साहित्यिक इकाइयाँ होती हैं, लगभग हर चीज़ में एक शुरुआत, मध्य और अंत होता है।

तो यहाँ यह कहा जा रहा है कि इन सारांश कथनों के साथ यह वह तरीका है जिससे वह अपनी कथा के एक भाग का समापन कर रहा है और यह हमें बताता है कि वह दूसरे खंड पर आगे बढ़ रहा है। इसलिए, इन "और वे सभी हमेशा खुशी से रहते थे" सारांश कथनों का होना बहुत मददगार है। अब यह इतना घिसा-पिटा या सूत्रबद्ध नहीं है, लेकिन कम से कम हमारे पास ये सारांश कथन तो हैं।



तो यह प्रेरितों के काम 2:42 में था। यहाँ प्रेरितों के काम 6:7 में एक है "इस प्रकार परमेश्वर का वचन फैल गया। यरूशलेम में शिष्यों की संख्या तेजी से बढ़ी और बहुत से याजक विश्वास के आज्ञाकारी बन गए।" आप प्रेरितों के काम 9:31 पर जाएँ, वहाँ एक और सारांश कथन है: "तब यहूदिया, गलील और सामरिया में कलीसिया ने शांति का समय बिताया।" तो ये सारांश कथनों के कुछ उदाहरण मात्र हैं और उन्होंने कथा में इन्हें टूटने वाले बिंदुओं के रूप में दर्शाया है। आपको इन्हें पढ़ते समय ध्यान में रखना चाहिए। तो सारांश बिंदु, हमें उन पर गौर करने की आवश्यकता है।

#### **N. यहूदियों के विरोध पर प्रकाश डाला गया है [55:32-58:01]**

प्रेरितों के काम की पुस्तक में अक्सर यहूदियों के विरोध को उठाया गया है और वास्तव में शुरुआती चर्च के प्रति यहूदियों के विरोध को दर्शाया गया है। यह विरोध बहुत मजबूत है और इसे बहुत विस्तार से दर्ज किया गया है। तो चलिए मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ। पॉल खुद, जो खुद फरीसियों का एक फरीसी था जैसा कि हम फिलिप्पियों से जानते हैं, गमलिएल के अधीन अध्ययन किया था जो सभी समय के चार महान रब्बियों में से एक था; [अकीबा, हिलेल, शम्माई और गमलिएल], एक महान रब्बी जो आज भी पूरे यहूदी धर्म में जाना जाता है। पॉल ने उसके अधीन अध्ययन किया जिससे पता चलता है कि पॉल का दिमाग बहुत तेज रहा होगा। लेकिन यहाँ प्रेरितों के काम की पुस्तक में जो मिलता है वह यह है कि पॉल यहूदी होने के बावजूद भी इस यहूदी विरोध को उठाता है। प्रेरितों के काम 13:50 कहता है, "प्रभु का वचन पूरे क्षेत्र में फैल गया, परन्तु यहूदियों ने परमेश्वर से डरनेवाली कुलीन स्त्रियों और नगर के प्रमुख लोगों को भड़काया। उन्होंने पौलुस और बरनबास के विरुद्ध उत्पीड़न भड़काया [किसने उत्पीड़न भड़काया? यहूदियों ने] और उन्हें अपने क्षेत्र से निकाल दिया।" तो आपको पौलुस और बरनबास के प्रति यह विरोध और यहूदियों द्वारा उनका निकाला जाना मिलता है।

प्रेरितों के काम 13:46 में एक और अंश आता है, जिसके बारे में मेरा मानना है कि यह भी प्रथम मिशनरी यात्रा पर है, "पौलुस अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया।" जब पौलुस शहर से बाहर से आता है तो वह अपना मंत्रालय कहाँ से शुरू करता है? वह यात्रा कर रहा है और लोगों के साथ उसका पहला संपर्क कहाँ है? वह आराधनालय में जाता है "जैसा कि उसका रीति था।"

"और तीन सप्ताह के दिन वह पवित्रशास्त्र से तर्क करता था। लेकिन यहूदी ईर्ष्यालु थे इसलिए उन्होंने बाजार से कुछ बुरे लोगों को इकट्ठा किया, एक भीड़ बनाई [यह पहली फ्लैश मॉब है] और शहर में दंगा शुरू कर दिया।" शहर में दंगा किसने शुरू किया? यहूदियों ने इन बुरे लोगों को इकट्ठा किया, उन्हें पॉल की बातें पसंद नहीं आईं, उसने आराधनालय में तीन सप्ताह तक उनके साथ तर्क किया और फिर उन्होंने इन बुरे लोगों को इकट्ठा किया, एक भीड़ इकट्ठी की और पॉल के खिलाफ दंगा शुरू कर दिया।

### ओ . यहूदी विद्रोहों पर प्रकाश डालने वाले प्रेरितों के काम [58:01-62:47]

तो, फिर से, यहूदियों द्वारा इन दंगों को भड़काने और इन विद्रोहों को भड़काने की विशेषता है। अब, इसी प्रकार की बात प्रेरितों के काम 22:23 में पाई जाती है, "जब वे चिल्ला रहे थे और अपने कपड़े उतार रहे थे और हवा में धूल उड़ा रहे थे, तो सेनापति ने आदेश दिया कि पॉल को वापस बैरक में ले जाया जाए।" दूसरे शब्दों में, पॉल को बाहर लाया गया, वह लोगों के सामने बोलता है, और लोग अपने कपड़े फाड़ना और हवा में धूल उड़ाना शुरू कर देते हैं। अंत में, पॉल को नियंत्रित करने वाला रोमन सैनिक कहता है कि उसे उसे वापस ले जाना है क्योंकि एक और दंगा है। मेरा मानना है कि यह यरूशलेम में था; और उसने निर्देश दिया कि उसे कोड़े मारे जाएँ। तो यहाँ पॉल को इन रोमनों द्वारा कोड़े मारे जाने वाले हैं क्योंकि दंगे चल रहे हैं। फिर मुझे लगता है कि इस संदर्भ में, पॉल इस रोमन सैनिक को यह कहते हुए थोड़ा सा याद दिलाता है, "तुम मुझे कोड़े मारने जा रहे हो? क्या तुम्हारे लिए एक रोमन नागरिक को कोड़े मारना उचित है?" इस सैनिक ने सोचा कि पॉल सिर्फ एक यहूदी उपद्रवी था। पॉल एक रोमन नागरिक है, इसलिए आप उसे यूँ ही कोड़े नहीं मार सकते। इसलिए यह रोमन सैनिक कहता है, "मैं रोमन नागरिकों से पंगा नहीं लेता।" वह कहता है। "मुझे अपनी नागरिकता एक हाथ और पैर की कीमत पर मिली है। मैं रोमन नागरिकता की सराहना करता हूँ।" पॉल ने जवाब दिया, "मैं स्वतंत्र पैदा हुआ था। मैं रोमन नागरिक के रूप में पैदा हुआ था।" इसलिए यह आदमी पीछे हट जाता है और पॉल को उस समय कोड़े नहीं मारे जाते। इसलिए मैं जो बात सामने लाने की कोशिश कर रहा हूँ, वह यह है कि पाठ यहूदी विद्रोह

की इस पूर्ति को उजागर करता है और ये यहूदी विद्रोह करते हैं और ये यहूदी भीड़ को संगठित करके बुरे लोगों के साथ मिलकर पॉल को अवैध रूप से पीटते हैं। मुझे लगता है कि यह सब यहूदी लोगों और पॉल के उत्पीड़न पर नकारात्मक प्रकाश डालने के लिए है।

अब, यहूदियों और पॉल के बीच इस संघर्ष पर ध्यान दें। मुझे लगता है कि यह प्रेरितों के काम की पुस्तक के बड़े उद्देश्य से जुड़ा है। मुझे इसे अभी बता देना चाहिए और हम एक मिनट में इस पर वापस आएं। मुझे लगता है कि जो हो रहा है वह यह है कि लूका सबसे उत्तम थियोफिलस को लिख रहा है। सबसे उत्तम थियोफिलस का उल्लेख लूका 1:1 में किया गया है और उसका उल्लेख प्रेरितों के काम 1:1 में भी किया गया है। तो थियोफिलस एक ऐसा व्यक्ति है जिसके लिए दोनों पुस्तकें संबोधित हैं। उसे "सबसे उत्तम थियोफिलस" कहा जाता है। तो यह आदमी किसी तरह का सरकारी अधिकारी है, वह किसी तरह का बड़ा आदमी है।

तो मैं क्या सोचता हूँ कि लूका, यह मेरी ओर से अनुमान है लेकिन मुझे लगता है कि यह उचित है। पॉल सीज़र के सामने मुकदमे में जा रहा है। और इसलिए मुझे लगता है कि लूका इन बातों को एक साथ जोड़कर कह रहा है कि "थियोफिलस, क्या तुम हमारी मदद कर सकते हो, महामहिम थियोफिलस? शायद तुम सीज़र और रोम के कुछ लोगों के साथ कुछ दबाव बना सको, पॉल परेशानी पैदा करने वाला नहीं है। पॉल परेशानी पैदा करने वाला नहीं है। जो हुआ वह यह है कि ये यहूदी पॉल के लिए परेशानी खड़ी कर रहे हैं।" तो, मूल रूप से, यह कहने का प्रयास है कि पॉल उन आरोपों से निर्दोष है कि वह दंगे कर रहा है। वह उन आरोपों से निर्दोष है और लूका उन यहूदी लोगों पर दोष मढ़ता है जिन्होंने पॉल के खिलाफ इतनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

तो फिर प्रेरितों के काम क्यों लिखे गए? बहुत संभावना है कि पॉल अपने जीवन के सबसे बड़े मुकदमे का सामना करने जा रहा है, कैसर के सामने जाने वाला है, और मुझे लगता है कि लूका यह सब इसलिए लिख रहा है ताकि वह सबसे अच्छे थियोफिलस को यह कहने के लिए प्रोत्साहित कर सके कि "क्या आप कैसर के साथ आने वाले पॉल के मुकदमे में उसकी मदद कर सकते हैं?" और इसलिए वह डेटा प्रस्तुत करता है। और यही कारण है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का डेटा हमें यह नहीं बताता है कि थॉमस के भारत जाने पर उसके साथ क्या हुआ। यह हमें नहीं बताता है। यह पॉल पर केंद्रित है, क्योंकि पॉल कैसर के सामने एक अदालती मामले में जा रहा

है और लूका उसे पॉल की मदद करने के लिए कह रहा है। मुझे लगता है कि इसीलिए पॉल पर इतना ध्यान केंद्रित किया गया है। यही कारण है कि बरनबास और जॉन मार्क पीछे हट जाते हैं। वे पीछे हट जाते हैं क्योंकि ध्यान पॉल पर है। “पॉल सबसे अच्छे थियोफिलस का मुकदमा करने जा रहा है, क्या आप मदद कर सकते हैं?” इसलिए मुझे लगता है कि यही तर्क है और फिर यही ध्यान केंद्रित हो जाता है और यही कारण है कि इतिहास लिखा गया है और प्रेरित पॉल पर इतना ध्यान केंद्रित किया गया है। पॉल के बारे में यह सारी जानकारी होना और पॉल को इन अलग-अलग स्थितियों में बातचीत करते देखना बहुत बढ़िया है क्योंकि पॉल रोमियों, 1 और 2 कुरिन्थियों, फिलिपियों, इफिसियों, कुलुस्सियों, थिस्सलुनीकियों और तीमुथियुस जैसी प्रमुख पुस्तकें लिखने जा रहा है। वह हमारे लिए ये सभी नए नियम के पत्र लिखने जा रहा है और इसलिए अब हम प्रेरित पॉल की पृष्ठभूमि जानते हैं। इसलिए यह हमारे लिए पॉल को समझने के लिए विहित रूप से सहायक है। लेकिन मुझे लगता है कि प्रेरितों की पुस्तक थियोफिलस को उन चीजों की आपूर्ति करने के लिए लिखी गई थी जिनकी उसे कैसर के सामने पॉल के बचाव में मदद करने की आवश्यकता थी। तो, यह कुछ हद तक अनुमान है, लेकिन मुझे लगता है कि यह एक उचित अनुमान है।

## **P. प्रेरितों के काम में विषय: प्रार्थना [62:47-65:16]**

### **G: केवल P को संयोजित करें; 62:47-65:16 प्रेरितों के काम में विषय**

अब, आरंभिक विषय क्या हैं? आरंभिक चर्च के कुछ पहले विवरण क्या हैं? हम अब यीशु से हटकर चर्च की ओर जा रहे हैं। इसलिए यीशु और उनके प्रेरितों से प्रेरितों और चर्च की ओर बदलाव हुआ है। आरंभिक विषयों में से कुछ प्रार्थना हैं। आरंभिक चर्च में यह एक बड़ा विषय है, प्रार्थना की यह धारणा। प्रेरितों के काम 1:14 में कहा गया है, “वे सभी लगातार प्रार्थना में शामिल रहे, साथ ही स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ।” यह एक बहुत ही रोचक टिप्पणी है। इसलिए वे सभी स्त्रियों के साथ प्रार्थना में शामिल हो रहे हैं, वहाँ स्त्रियों पर ध्यान दें। लूका हमेशा स्त्रियों वाली बात को उठाता है। यह विशेष रूप से विधवाओं और अनाथों पर प्रकाश डालता है, जैसा कि हमने लूका की पुस्तक में देखा। यीशु की माता मरियम अभी भी चर्च और उसके भाइयों जूड और जेम्स के साथ जुड़ी हुई है। सबसे अधिक संभावना है कि जूड और

जेम्स वास्तव में नए नियम की पुस्तकें लिखने जा रहे हैं। जेम्स जेम्स लिखते हैं, जेम्स जॉन के भाई ज़ेबेदी का बेटा नहीं है। जॉन के भाई जेम्स की जल्दी ही हत्या कर दी गई थी। लेखक जेम्स संभवतः यीशु के भाई थे। यही बात जूड के साथ भी सच है। तो, यह एक दिलचस्प विरोधाभास है, है न क्योंकि, पहले, मैं मार्क और अन्य स्थानों पर विश्वास करता हूँ, जब यीशु के भाई दिखाई देते हैं तो वे उसे ले जाने के लिए जाते हैं और वे उसे ले जाने के लिए आ रहे हैं। उन्हें लगता है कि वह पागल है। यह अब पता चलता है, पुनरुत्थान के बाद, हम देखते हैं कि यीशु के भाई चर्च में शामिल हो रहे हैं और जाहिर तौर पर धर्मांतरित हो गए हैं और मानते हैं कि यीशु वही थे जो उन्होंने कहा था, ईश्वर के पुत्र और मसीहा।

अध्याय 2 पद 42, "वे प्रेरितों की शिक्षा और संगति में रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लगे रहे," फिर से प्रार्थना की धारणा। और फिर प्रेरितों के काम 4:31 से इस प्रार्थना धारणा पर एक व्यक्ति कहता है, "जब उन्होंने प्रार्थना की, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे हुए थे, हिल गया। वे सभी पवित्र आत्मा से भर गए और परमेश्वर का वचन निर्भीकता से बोलने लगे।" तो उनके प्रार्थना करने के बाद वह स्थान हिल गया, प्रेरितों के काम 4:31। तो, प्रार्थना प्रारंभिक चर्च का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा थी।

### **प्रश्न: आरंभिक चर्च का संगठन—मोज़ेक संदर्भ [65:16-67:59]**

#### **एच: संयुक्त क्यूटी; 65:16-83:09; प्रारंभिक चर्च का संगठन**

अब प्रारंभिक चर्च का एक और हिस्सा है, आपके पास एक संगठन है, चर्च एक संगठन है। यह मुझे व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की याद दिलाता है। क्या आपको याद है? व्यवस्थाविवरण में मूसा से कैसे बदलाव हुआ। मूसा को अब एहसास हो रहा है, वह माउंट नेबो पर जा रहा है और वह मरने वाला है। मूसा वादा किए गए देश की ओर देखता है और वह अंदर नहीं जा सकता और उसे इसका एहसास होता है। इसलिए वह व्यवस्थाविवरण में जो करता है वह यह है कि वह इस्राएल की बुनियादी संस्थाओं की स्थापना करता है। वह उनसे कहता है, "हाँ, जब मैं चला जाऊँगा, तो प्रभु का सेवक मूसा मरने वाला है। मैं मरने वाला हूँ। जब तुम वादा किए गए देश में होगे तो वहाँ भविष्यद्वक्ता जाएँगे।" भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर का वचन बोलना था। परमेश्वर उनके मुँह में

अपना वचन डालता था। यदि वे झूठे भविष्यद्वक्ता हैं तो वे कहेंगे कि चलो दूसरे देवताओं के पीछे चलते हैं। वे झूठे भविष्यद्वक्ता हैं। इसलिए वह कहता है, "लेकिन तुम्हारे पास मेरे जैसे भविष्यद्वक्ता होंगे। तुम्हारे पास न्यायाधीश होंगे।" मूसा लोगों और उसके बाद सत्तर लोगों का न्याय करने में भी शामिल था। मूसा कहता है कि तुम न्यायाधीश रखोगे। सुनिश्चित करो कि वे न्यायाधीश रिश्वत न लें और इसलिए वह भविष्यद्वक्ताओं को नियुक्त करता है और वह न्यायाधीशों को नियुक्त करता है और वह लेवियों को भी नियुक्त करता है। और कहता है कि लेवियों को लेवीय शहर मिलेंगे, उन्हें बाकी जनजातियों की तरह विरासत नहीं मिलेगी। वे इस्राएल में बिखरे रहेंगे। लेवियों को इस्राएल को टोरा, कानून सिखाना है। फिर वह न्यायाधीशों और भविष्यद्वक्ताओं से राजा के पास जाता है। व्यवस्थाविवरण 17 में मूसा कहता है, "जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो तुम कहोगे, 'हमें अन्य राष्ट्रों की तरह एक राजा चाहिए।' ठीक है, अगर तुम्हें राजा मिल जाए। तुम्हारे लिए राजा होना अच्छा है, तुम राजा बनोगे। [मूसा के बहुत बाद तक दाऊद राजा रहेगा।] मूसा कहता है कि तुम राजा बनोगे, लेकिन सुनिश्चित करो कि राजा लोगों को लूटकर अपने लोगों की पीठ पर सवार होकर अपने लिए धन न बनाए। तुम सुनिश्चित करो कि वह पत्नियाँ न बढ़ाए और हरम न बनाए और तुम सुनिश्चित करो कि वह घोड़ों की संख्या न बढ़ाए और वह इतना बड़ा सैन्य परिसर न बनाए। इसके बजाय उसे प्रभु पर भरोसा रखना चाहिए। इसलिए मूसा ने राजतंत्र, पुरोहिती, भविष्यद्वक्ताओं और न्यायियों का वर्णन किया और मूल रूप से इस्राएल की संस्थाओं की स्थापना की क्योंकि वह मरने वाला था और इसलिए उसने इन संस्थाओं की स्थापना की।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में आपको कुछ ऐसा ही मिलता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक अब यीशु और उसके बारह प्रेरितों से आगे बढ़कर चर्च की ओर बढ़ रही है। अब यह प्रेरितों से आगे बढ़ रही है और किसी तरह के संगठन की आवश्यकता है। तो मूल रूप से, प्रेरितों के काम की पुस्तक में आपको इस प्रारंभिक संगठन का विवरण मिलता है। मैं बस यह बताना चाहता हूँ, जैसा कि हम करते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप अपने कुछ संप्रदायों के संबंधों पर विचार करें और यह कि आपका संप्रदाय चर्च के संगठन को कैसे करता है। इसलिए मैं इस क्रॉस थिंग, एक्रोस्टिक ADEP का उपयोग करना चाहता हूँ, ताकि प्रारंभिक चर्च में इस सरल संगठन के बारे में बताया जा सके।

## आर. प्रारंभिक चर्च में प्रेरित [67:59-71:28]

लोगों का पहला समूह प्रारंभिक चर्च में प्रेरित थे। बारह प्रेरित थे। अब, मुझे लगता है कि हमने पहले चर्चा की थी कि बारह प्रेरित क्यों थे। यह दिलचस्प है कि यहूदा बाहर जाता है और खुद को फांसी लगा लेता है। यहूदा चला गया। अब उनके पास ग्यारह प्रेरित हैं। अब आप सोचते हैं कि हम ग्यारह लोगों के साथ क्यों नहीं चलते। नहीं, नहीं, बारह होने ही थे। बारह होने ही थे और इसलिए बारह प्रेरित थे। और हमने कहा कि कुछ सहसंबंध था, मुझे लगता है कि जॉन की पुस्तक में जब हम इस पर चर्चा कर रहे थे कि बारह प्रेरितों और इस्राएल के बारह जनजातियों के बीच कुछ सहसंबंध था। तो आपको रहस्योद्घाटन की पुस्तक में मिलता है, आपको मोती के द्वार और यरूशलेम इस्राएल के बारह जनजातियों के लिए नीचे आते हुए मिलते हैं। और नए यरूशलेम की बारह नींव हैं, बारह नींव और बारह प्रेरित नीचे आते हैं। तो यह सहसंबंध है कि यीशु ने कहा, “तुम प्रेरित इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। बारह प्रेरित इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करेंगे। तो बारह प्रेरित और इस्राएल के बारह गोत्र हैं। आप समझते हैं कि बारह गोत्रों की गिनती करने के अलग-अलग तरीके हैं और बारह प्रेरितों को देखने के अलग-अलग तरीके हैं। आपके पास पौलुस का आना और प्रेरित होना है। पौलुस गैर-यहूदियों के लिए भी यीशु मसीह का प्रेरित है। वह अन्य प्रेरितों की तुलना में एक अलग तरीके से समय से बाहर पैदा हुआ प्रेरित बन जाता है। क्या आपको याद है कि प्रेरित होने के लिए दो आवश्यकताएँ क्या थीं? यह दिलचस्प बात प्रेरितों के काम की पुस्तक में आती है। जब वे यहूदा की जगह लेने गए तो दो आवश्यकताएँ थीं। सबसे पहले, उसे शुरू से ही यीशु के साथ रहना होगा। उसे यीशु के सभी चमत्कार देखने होंगे। उसे दृष्टान्तों की शिक्षा सीखनी होगी। उसे यह देखना होगा: मैं जीवन की रोटी हूँ और मैं अच्छा चरवाहा हूँ, “मैं हूँ” कथन। उसे यीशु की सेवकाई के अधीन बैठना होगा। उसे शुरू से ही साक्षी होना चाहिए था, जाहिर है कि यीशु के साथ यात्रा करने वाले बहुत से लोग थे, जिनमें महिलाओं का एक समूह भी शामिल था जो उसका समर्थन कर रही थी। तो इस आदमी को शुरू से ही होना चाहिए था। पहली बात, उसे शुरू से ही यीशु के साथ रहना चाहिए था। दूसरी आवश्यकता यह थी कि उसे पुनरुत्थान को व्यक्तिगत रूप से देखना चाहिए था। उसे पुनर्जीवित प्रभु को देखना चाहिए था। तो यहाँ आपके पास ये दो आवश्यकताएँ हैं: शुरू से ही, शुरू से ही यीशु के साथ रहना और पुनरुत्थान को देखना।

फिर, उन्होंने मथायस को बारहवें प्रेरित के रूप में चुना और अब उनके पास बारह प्रेरित हैं। इसलिए प्रेरित "भेजे गए लोग" हैं। यह एक दिलचस्प बात है कि *अपोस्टोलोस* शब्द का अर्थ है "भेजा गया व्यक्ति।" वैसे, *अपोस्टोलोस* का अर्थ है "भेजा गया व्यक्ति।" वे वे लोग हैं जिन्हें संदेश के साथ मंत्रालय में भेजा जाता है। लेकिन यह रोमियों की पुस्तक में दिलचस्प है, वहाँ एक महिला है जिसका नाम जूनियास है। पॉल इस महिला जूनियास को बधाई देता है जिसे वह एक प्रेरित के रूप में लेबल करता है, जिसे भेजा जाता है। इसलिए यह बहुत दिलचस्प है कि वह बारह में से एक नहीं है, लेकिन उसे इस "भेजे गए व्यक्ति" के रूप में लेबल किया गया है। उसे एक प्रेरित के रूप में लेबल किया गया है और वह रोमियों 16 की पुस्तक में महिला है। इसलिए यह एक दिलचस्प बात है कि "प्रेरित" शब्द इन बारह पर लागू होता है, लेकिन फिर ऐसा लगता है कि जिन्हें भेजा जाता है उन्हें भी प्रेरित कहा जाएगा। जैसे कि एक बड़ा "ए" प्रेरित है, लेकिन एक छोटा "ए" प्रेरित है। तो वहाँ एक अंतर है। तो ये हैं बारह, प्रेरितों के काम 1.

### **प्रारंभिक चर्च में एस. डीकन [71:28-75:52]**

छठे अध्याय में डीकन का क्या उल्लेख है? प्रेरितों के काम के छठे अध्याय में, चर्च को एक प्रारंभिक समस्या है। समस्या यह है कि उनके पास यूनानी विधवाएँ हैं और उनके पास हिब्रू विधवाएँ भी हैं। याद रखें कि लूका हमेशा विधवाओं और लूका की पुस्तक से इकलौते बच्चे वाली बात को उठाता है। जब कोई इकलौता बच्चा होता है तो लूका उसे उठाता है। जब वे विधवा थीं, तो वह उसे उठाता है। तो फिर प्रेरितों के काम की पुस्तक में, यहाँ अध्याय छह में यूनानी विधवाएँ थीं जिन्हें भोजन के दैनिक वितरण में अनदेखा किया जा रहा था। वे सभी चीजें साझा कर रही थीं, यूनानी महिलाओं को अनदेखा किया जा रहा था और हिब्रू महिलाओं को नहीं। तो यह संघर्ष है, तो आप देख सकते हैं कि यह सांस्कृतिक/जातीय आधार पर है। इसलिए उन्होंने डीकन की स्थापना की, डीकन को इस बात का ध्यान रखने के लिए नियुक्त किया। तो डीकन तब चर्च की ज़रूरत के लिए एक प्रतिक्रिया थे। यूनानी महिलाओं को हिब्रू महिलाओं की तरह ही मदद मिलनी चाहिए। उस समस्या को हल करने के लिए, प्रेरित उस सब में शामिल नहीं होना चाहते थे। उन्हें इन महिलाओं की देखभाल करने के लिए लोगों की ज़रूरत थी और इसलिए उन्होंने डीकन बनाए। उन्होंने सात



लोगों को चुना। स्टीफन पहले डीकन में से एक थे, जो स्थिति को संभालने वाले एक ईमानदार व्यक्ति थे। अध्याय छह में और फिर अध्याय सात में कहा गया है कि स्टीफन अपना भाषण देते हैं, जिसके बाद उन्हें पत्थर मारकर मार दिया जाता है। इसलिए यह दिलचस्प है कि अध्याय छह में स्टीफन को चर्च में डीकन होने की यह बड़ी ज़िम्मेदारी दी गई है। फिर, अगले अध्याय में वह एक लंबा भाषण देते हैं और उन्हें पत्थर मारकर मार दिया जाता है। इसलिए, उन दो अध्यायों में स्टीफन छठे और सातवें दोनों स्टीफन और डीकन के बारे में हैं। आज हमारे कई चर्चों में डीकन बोर्ड होंगे। उस पर कुछ बातें, मैं शुरू में एक बहुत ही रूढ़िवादी, स्वतंत्र मौलिक बैपटिस्ट चर्च में बड़ा हुआ। हमारे पास हमेशा एक डीकन बोर्ड होता था और डीकन बोर्ड पादरी को नियुक्त करता था। डीकन चर्च चलाते हैं। यदि आप उस तरह के संदर्भ में हैं, तो उस संदर्भ में से कुछ में आपके पास एक डीकन बोर्ड है और आपके पास एक पादरी है जिसे डीकन बोर्ड द्वारा नियुक्त किया जाता है। डीकन बोर्ड चर्च को चलाता है, जो बैपटिस्ट चर्च की राजनीति का एक हिस्सा है। अलग-अलग चर्च इसे अलग-अलग तरीके से संभालते हैं। तो आप देखते हैं कि डीकन कहाँ से आते हैं। डीकन को ज़रूरत के आधार पर शुरू किया गया था। चर्च की ज़रूरत थी इसलिए उन्होंने उस ज़रूरत को पूरा करने के लिए एक संगठन बनाया। क्या यह चर्चों के लिए उचित है? क्या चर्चों के लिए सूचक किचन में शामिल होना और गरीबों की मदद करना उचित है? खैर, यहाँ आप प्रेरितों के काम की किताब में देखते हैं, शुरुआती चर्च गरीबों की मदद करने में शामिल था। तो डीकन ग्रीक विधवाओं बनाम हिब्रू महिलाओं के संघर्ष से बाहर आते हैं। एक बहुत ही महान इतिहास है जो चर्च की शुरुआत में वापस जाता है।

चर्च वास्तव में चर्च की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा था, यही सबसे बड़ी बात है कि डॉक्टर ग्रीन, गॉर्डन कॉलेज में, साल्वेशन आर्मी आंदोलन के अग्रणी लोगों में से एक हैं। यह साल्वेशन आर्मी ऐसा करती है, लोगों को नौकरी कौशल के साथ प्रशिक्षण देने में बहुत अच्छी तरह से। और फिर ज़रूरत के समय सामान लेने और आने की अनुमति भी देती है। जब 9/11 हुआ तो मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। जब न्यूयॉर्क शहर में ग्रेट टावर्स में 9/11 हुआ तो सबसे पहले कौन वहाँ था? रेड क्रॉस वहाँ था और कह रहा था, "हमें पैसा दो, हमें पैसा दो। हमें पैसा दो ताकि हम उनका समर्थन कर सकें।" वह साल्वेशन आर्मी नहीं थी। साल्वेशन आर्मी पैसा नहीं मांग रही थी, वे वहाँ थे।

वे लोगों की तुरंत मदद करने के लिए कंबल और विभिन्न चीजें वितरित कर रहे थे वे अरबों-खरबों डॉलर जुटाने और इन सभी प्रशासकों पर लाखों डॉलर खर्च करने के लिए नहीं कह रहे थे, ताकि इस "सहायता" को प्रशासित किया जा सके। मेरे मन में साल्वेशन आर्मी और उनके द्वारा किए जाने वाले काम के लिए बहुत सम्मान है। यह जबरदस्त है। क्या यह शास्त्र के साथ फिट बैठता है? बिल्कुल फिट बैठता है। प्रेरितों के काम 6, डीकन और वहाँ की पूरी बात विधवाओं के लिए भोजन का वितरण है।

### टी. प्रारंभिक चर्च के एल्डर्स [75:52-83:09]

अब, यहाँ पदों का एक और सेट है और यह थोड़ा जटिल हो जाता है। यह चर्च की राजनीति/सरकार या चर्च संगठनात्मक संरचना पर एक पाठ्यक्रम नहीं है। मैं ग्रीक शब्द देने जा रहा हूँ इसलिए नहीं कि मैं चाहता हूँ कि आप ग्रीक सीखें। मैं चाहता हूँ कि आप ग्रीक सीखें लेकिन इसे देखें। एल्डर्स को, इस शब्द को सुनिए, *प्रेस्ब्यूटेरोई कहा जाता है*। एल्डर्स *प्रेस्ब्यूटेरोई हैं*। अनुमान लगाइए कि किस चर्च में एल्डर्स की विशेषता होती है, चर्च में एल्डर बोर्ड के रूप में डीकन बोर्ड के विपरीत? एल्डर्स कौन करता है-- *प्रेस्ब्यूटेरोई*। क्या आप प्रेस्बिटेरियन के साथ संबंध का अनुमान लगा सकते हैं? प्रेस्बिटेरियन चर्चों में एल्डर्स का एक बोर्ड होता है। तो मूल रूप से यह इस शब्द *प्रेस्ब्यूटेरोस से आया है*, जिसका अनुवाद "एल्डर" है।

अब, यहाँ एक और शब्द है जो लगभग एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। ये समानार्थी हैं। जब भी आपके पास समानार्थी शब्द होंगे, तो समानता के क्षेत्र और मतभेद के क्षेत्र होंगे, लेकिन यह एक दूसरा शब्द है जिसे "ओवरसियर" कहा जाता है। जैसा कि प्रेस्ब्यूटेरोई का अनुवाद "एल्डर" किया जाएगा, इन ओवरसियर का अनुवाद *एपिस्केपोस से किया गया है*। *एपिस्केपोस*, यह कैसा लगता है? *एपिस्केपोस* एपिस्कोपेलियन जैसा लगता है। *एपिस्केपोस एपिस्कोपेलियन हैं जो ओवरसियरों के एक बोर्ड द्वारा चलाए जाते हैं। ये ओवरसियर हैं। इसलिए हमने कहा कि इन शब्दों का इस्तेमाल कुछ हद तक एक दूसरे के स्थान पर किया गया है। इसलिए मैं इन ओवरसियरों या इन एपिस्केपोस और एल्डर्स या प्रेस्ब्यूटेरोई के बीच कोई बड़ा अंतर नहीं करता।*

फिर इसी तरह, "पादरी" शब्द है। "पादरी" शब्द वास्तव में ग्रीक *पोइमेन से आया है* जिसका अर्थ है "चरवाहा"। चरवाहा, चरवाहे की इस धारणा में निहित है। जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों की देखभाल करता है, वैसे ही एक पादरी अपने लोगों की देखभाल करता है। इसलिए एक पादरी के पास अपने लोगों के लिए सच्चा दिल होना चाहिए, जैसे एक चरवाहे के पास अपनी भेड़ों के लिए दिल होता है। इसलिए पादरी शब्द यहाँ फिट बैठता है। बहुत सारे चर्चों में एल्डर्स का एक बोर्ड होगा और फिर मुख्य एल्डर या एक शिक्षण एल्डर होगा। कभी-कभी वे एल्डर्स के बीच समानता या समानता होगी। वे समान होंगे लेकिन इसका एक विशेष कार्य होगा कि उसे एक शिक्षण एल्डर माना जाता है। अब, अन्य एल्डर्स के पास चर्च में अलग-अलग कार्य होंगे। कुछ चर्चों में शिक्षण एल्डर को पादरी के रूप में लेबल किया जाएगा।

तो अलग-अलग संरचनाएँ और, फिर से मुझे लगता है कि नया नियम यह नहीं कह रहा है कि आपको बिल्कुल ऐसा ही होना चाहिए। हम देखते हैं कि चर्च की संरचना चर्च की ज़रूरतों से निकली है। जब आज आपके पास हज़ार या दो हज़ार लोगों वाले कुछ चर्च हैं, तो क्या आप दो हज़ार लोगों के लिए अलग संरचना बनाने जा रहे हैं, जबकि जब आप न्यू इंग्लैंड में आते हैं, जहाँ आपके पास पच्चीस लोगों का चर्च है या आपके पास दस लोगों का हाउस चर्च है। क्या उस हाउस चर्च की संरचना दो हज़ार लोगों के चर्च से अलग होगी? बेशक यह होने जा रहा है और इसलिए आप ज़रूरत के आधार पर संरचना को अनुकूलित करने जा रहे हैं। यही प्रेरितों के काम 6 का मुद्दा था। आपकी ज़रूरत है और आप उस ज़रूरत को पूरा करने के लिए एक संरचना विकसित करते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि चर्च की राजनीति/सरकार में बहुत ज़्यादा लचीलापन है। यह फिर से मेरी निजी राय है। अलग-अलग चर्च, बैपटिस्ट, अपनी संरचना के मामले में अलग-अलग तरीके से काम करेंगे, लेकिन बैपटिस्ट के भीतर भी अलग-अलग चर्च संरचनाएँ चर्च के आकार पर निर्भर हो सकती हैं। वे इसे अलग-अलग तरीके से संभालेंगे। प्रेस्बिटेरियन, जैसा कि हमने कहा कि वे सभी समान एल्डर हैं, फिर भी एक या कई शिक्षण एल्डर हो सकते हैं। और *एपिस्कैपोस*, एपिस्कोपेलियन भी इसे अलग तरीके से संभालेंगे। इसलिए प्रत्येक समूह के भीतर भी चर्च के आकार और ज़रूरतों के आधार पर भिन्नता होनी चाहिए। उन चीजों में लचीलापन होने की अनुमति है।

अब एक बात जिस पर हमें थोड़ी बात करने की ज़रूरत है, वह है भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वक्ताओं की धारणा। शुरुआती चर्च में भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्ताएँ थीं। भविष्यद्वक्ताओं में, शायद सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति जिसे आप प्रेरितों के काम की किताबों में देखेंगे, वह है अगबस। अगबस लगभग एलियाह की तरह है। वह एलियाह की तरह ही देश में आने वाले अकाल के बारे में भविष्यवाणी करता है। पॉल गरीबों की मदद करने के लिए इस सारे पैसे के साथ फिलिस्तीन गया। तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान पॉल पैसे इकट्ठा कर रहा था, इसलिए जब वह यरूशलेम वापस आया, तो वह मदद करेगा। फिलिस्तीन में अकाल पड़ा था, इसलिए वह यरूशलेम में गरीब लोगों की मदद करने जा रहा था। अगबस नबी ऊपर जाता है और पॉल को अपने कपड़े के इस हिस्से से बांधता है और कहता है, "जो कोई भी इस कपड़े को पहनता है, अगर तुम यरूशलेम जाते हो तो वे तुम्हें वहाँ कैद कर लेंगे। तुम्हें बड़ी समस्याएँ होंगी। तुम्हें वहाँ जेल में डाल दिया जाएगा।" इसलिए अगबस ने समय से पहले ही पॉल को चेतावनी दे दी और इसलिए इस भविष्यद्वक्ता ने पॉल को बताया कि उसके लिए आगे क्या होने वाला था। "निश्चित रूप से," पॉल ने कहा, "मुझे वहाँ जाना है। निश्चित रूप से उसे जेल में डाल दिया गया है। इसलिए आपके पास अगबस एक भविष्यद्वक्ता के रूप में है। आपके पास फिलिप की भविष्यवाणी करने वाली बेटियाँ भी हैं। और प्रेरितों के काम 21:8 में: "अगले दिन हम कैसरिया पहुँचे और फिलिप प्रचारक के घर में ठहरे। सात में से एक..." तो फिलिप प्रचारक सात में से एक था, जिसका अर्थ है कि वह मूल उपयाजकों में से एक है। उसकी चार अविवाहित बेटियाँ थीं जो भविष्यवाणी करती थीं। तो ये चार अविवाहित बेटियाँ हैं, अविवाहित बेटियाँ जिन्होंने भविष्यवाणी की।

तो यहाँ हमारे पास हुल्दा या डेबोरा और यहाँ तक कि मरियम जैसी एक तरह की महिला है। आपको याद होगा कि मरियम ने ल्यूक की पुस्तक में जो महान मैग्निफिकैट दिया था, उसे किया था। जहाँ मरियम ने मैग्निफिकैट दिया था "मेरी आत्मा प्रभु की महिमा करती है," और मरियम ने ईश्वर की स्तुति की और शास्त्र दिया और यह वास्तव में हमारे शास्त्र में दर्ज है। मरियम शायद पुराने नियम का सबसे अच्छा उदाहरण है। मरियम, निर्गमन 15 में जब वे लाल सागर या रीड सागर को पार कर गए, जब वे लाल सागर को पार कर गए, तो मरियम ने मुड़कर यह गीत गाया। मरियम भी, जब संख्या 12 में, वह मूसा की बड़ी बहन है, लेकिन उसे भविष्यद्वक्ता माना जाता है। ईश्वर कहते हैं,

“मैं सपनों और दर्शन में भविष्यवक्ताओं से बात करता हूँ। लेकिन मूसा से, मैं आमने-सामने बात करता हूँ।” उस बिंदु पर मरियम को फटकार लगाई जाती है। ऐसा लगता है कि मरियम भविष्यवक्ता थी। वह अधिक शास्त्र देती है; वह एक गीत बनाती है और गीत गाती है। यह संरचना तो आपके पास भविष्यवक्ता और भविष्यवक्ता हैं। अब, यह एक बड़ा सवाल उठाता है और मुझे आपके साथ ईमानदारी से कहना है कि मैं इन सभी चीजों को हल नहीं कर सकता, लेकिन इसके बारे में सोचने के लिए कुछ तरीके और रूपरेखाएँ हैं। आपके पास भविष्यद्वक्ताओं के विभिन्न स्तर हैं। क्या यह कहना है कि ये भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्ताएँ ही वे हैं जो नया नियम लिखने जा रहे हैं? नहीं, यह वास्तव में सच नहीं है। मैथ्यू नया नियम लिखता है, मार्क नया नियम लिखता है। ल्यूक नया नियम लिखता है। मैं मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जिसे जॉन द बैपटिस्ट के अलावा भविष्यद्वक्ता कहा गया हो।

## **यू. भविष्यद्वक्ता और पुराने नियम में उनकी भूमिका [83:09-86:08]**

### **I: संयुक्त U- V; 83:09-90:42; भविष्यद्वक्ता**

पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं ने बहुत सारे पवित्रशास्त्र लिखे, लेकिन ऐसे भविष्यवक्ता भी थे जिन्होंने सिर्फ परमेश्वर के वचन बोले, जिन्होंने कभी परमेश्वर के वचन को नहीं लिखा और उन्हें कभी भी प्रामाणिक पवित्रशास्त्र नहीं बनाया गया। इस साल हमारी कक्षा के एक छात्र ने उदाहरण के लिए नाथन का जिक्र किया।

क्या आपको याद है कि नाथन डेविड और बाथशेबा के पास आया था? डेविड की बाथशेबा से यह मुलाकात होती है, उसे पता चलता है कि वह गर्भवती है। डेविड हित्ती उरीयाह को मार देता है। अब डेविड सोचता है कि वह इससे बच गया है क्योंकि वह उसके पति हित्ती उरीयाह की मौत के साथ गर्भावस्था को छुपाता है। फिर कौन आता है? नाथन नबी कहता है, "डेविड मैं तुम्हें एक आदमी की कहानी सुनाता हूँ जिसके पास एक छोटी भेड़ थी और दूसरे आदमी के पास सैकड़ों भेड़ें थीं।" फिर वह डेविड के पास जाता है और कहता है, "तुम ही वह आदमी हो। तुमने इस महिला के बेचारे पति को मार डाला, इस आदमी की एक पत्नी थी और तुमने उसे तब ले लिया जब तुम्हारे पास बहुत सारी भेड़ें थीं।" नाथन ने राजा डेविड को फटकार लगाई। अब, क्या नाथन ने कभी नाथन की

किताब लिखी थी? नहीं, उसने नहीं लिखी। किताब में और भी लोग थे जो जोशुआ की किताब या याशेर की किताब से दिमाग में आए। जोशुआ की किताब में लिखा है "अगर तुम्हें इन ऐतिहासिक बातों पर यकीन नहीं है तो तुम याशेर की किताब में जाकर देख लो।" क्या तब मीकायाह या एलियाह और एलीशा जैसे भविष्यवक्ता घूम रहे थे। लेकिन क्या एलियाह और एलीशा ने कोई किताब लिखी थी? एलियाह और एलियाह ने ऐसी कोई किताब नहीं लिखी जिसके बारे में हम जानते हैं। एलियाह की कोई किताब नहीं है। 2 राजाओं में एलियाह और एलीशा के बारे में एक लंबा खंड है, लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं। उन्होंने नहीं लिखा, वे मौखिक भविष्यवक्ता थे। इसलिए मुझे आश्चर्य होता है कि इनमें से कुछ लोग भविष्यवक्ता थे और उन्होंने परमेश्वर का वचन बोला। वे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का वचन बोलते हैं, लेकिन वे शास्त्र के लेखक नहीं थे। इसलिए भविष्यवाणी के अलग-अलग स्तर हैं। उनमें से कुछ परमेश्वर का वचन बोलते हैं, लेकिन वे प्रामाणिक रूप से लिखने वाले भविष्यवक्ता नहीं हैं। मूसा प्रभु का भविष्यवक्ता था, प्रभु का सेवक। मूसा ने वास्तव में चीज़ें लिखीं। यिर्मयाह परमेश्वर का भविष्यवक्ता था, जिसे बचपन से ही, वास्तव में उसके जन्म से पहले ही बुलाया गया था। और यिर्मयाह यिर्मयाह की महान पुस्तक लिखने जा रहा है। और यशायाह, यहजकेल, दानियेल, ये लोग भविष्यवक्ता हैं। वे होशे, योएल या आमोस जैसे भविष्यवक्ता थे। बारह में से बारह भविष्यवक्ता वे भविष्यवक्ता थे जिन्होंने परमेश्वर का वचन लिखा था। वे अन्य भविष्यवक्ता भी थे। क्या आपको याद है कि एलीशा ने भी उस उदाहरण का उपयोग किया था? एलीशा ने बाल के चार सौ भविष्यवक्ताओं को हराया और परमेश्वर से भाग गया। परमेश्वर ने कहा, "अरे, एलियाह, ओबद्याह ने उत्तरी राज्य में लगभग सौ भविष्यवक्ताओं को छिपा रखा था।" तो उस समय एलियाह के अलावा कई भविष्यवक्ता थे लेकिन जब ईज़ेबेल उसके पीछे आई तो एलियाह को अकेलापन महसूस हुआ। इसलिए, मैं यहाँ कह रहा हूँ कि वे अन्य भविष्यवक्ता हैं जो भविष्यवक्ता लिखते हैं जो शास्त्र लिखते हैं। भविष्यवक्ताओं के पास परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के वचन को संप्रेषित करने के लिए अन्य कार्य थे, ठीक है।

#### **v. नये नियम और झूठे भविष्यवक्ताओं को सुरक्षित रखना [86:08-90:42]**

और, इसलिए, मुझे आज आश्चर्य होता है कि क्या आज भी हमारे पास भविष्यवक्ता और

अन्य चीजें हैं? और मैं यह कहना चाहता हूँ कि मुझे नहीं लगता कि इस समय शास्त्र प्रकार के विहित भविष्यवक्ताओं की रचनाएँ हैं, तोप बंद हो चुकी है। अब हमारे पास बाइबल है। मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है - और यह इस पर एक साइड पॉइंट है, लेकिन मुझे लगता है कि यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। क्या पॉल ने कभी नया नियम देखा? क्या मैथ्यू ने कभी नया नियम देखा? क्या ल्यूक ने कभी नया नियम देखा? यहाँ तक कि जॉन ने भी कई साल बाद संभवतः इफिसुस से लिखा। क्या जॉन ने कभी नया नियम देखा? इसका उत्तर है, नहीं। ये पुस्तकें लिखी गईं, पॉल ने ये पत्र लिखे, उन्होंने एक फिलिप्पी को, एक थिस्सलुनीके को और एक कुरिन्थ को लिखा। प्राचीन निकट पूर्वी भूमध्य सागर में यहाँ-वहाँ पत्र बिखरे हुए हैं।

और इसलिए जो हो रहा है वह यह है कि उन पुस्तकों को एकत्र किया जाना है। और उन पुस्तकों को एकत्र करने में वर्षों लग गए। और इसलिए आप कहते हैं, क्यों एक चर्च ज़ेरोक्स मशीन पर नहीं गया और इसे ज़ेरोक्स करके दूसरे चर्च को नहीं भेजा। आप ऐसा नहीं कर सकते थे। आपके पास प्रेरित पौलुस का यह पत्र है, क्या आप किसी को अंदर आने देंगे और वह पत्र ले लेंगे? बिल्कुल नहीं! तो आप जो करने जा रहे हैं वह यह है कि उस पत्र को हाथ से कॉपी करें और फिर उसे दूसरे चर्च को दें जो इसे चाहता है। लेकिन आप जो आपके पास है उसे रखने जा रहे हैं। आप उनसे सौदा करने की कोशिश कर सकते हैं। और कह सकते हैं, "हमें वह दे दो। मैं कुलुस्से से हूँ, और तुम इफिसुस से हो, चलो कुछ अदला-बदली करते हैं।" फिर से यह ज़ेरोक्स करना और उन्हें फ़ैक्स करना या उन्हें आपको ईमेल करना या उन्हें टेक्स्ट करना नहीं है। इन्हें हाथ से कॉपी करके ले जाना था और इसलिए ऐसा होने में वर्षों लग गए। पॉल ने कभी नया नियम नहीं देखा; पॉल ने कभी नया नियम नहीं देखा। जब तक जॉन जॉन का सुसमाचार लिख रहा था, तब तक पॉल मर चुका था और निश्चित रूप से जब तक रहस्योद्घाटन की पुस्तक लिखी गई थी। पॉल ने रहस्योद्घाटन की पुस्तक कभी नहीं देखी, वह मर चुका था। 68 ई. के आसपास और पुस्तक तीस साल बाद तक नहीं लिखी गई थी। इसलिए, मैं बस इतना कह रहा हूँ कि यह इसे देखने का एक अलग तरीका है, इसलिए तब कैनन को इकट्ठा किया गया और स्थापित किया गया।

अब यह स्थापित हो चुका है और हमारे पास परमेश्वर का वचन है और इसलिए यह समझना बहुत ज़रूरी है कि यह परमेश्वर का वचन है। यह पुस्तक परमेश्वर का वचन है। यह शास्त्र का एक

कैनन है और अब ऐसे भविष्यवक्ता हो सकते हैं जो परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का वचन बोलते हैं। मैं जानता हूँ कि यह सच है। यह उस शास्त्र में भी है जिसके बारे में हमने बात की थी। "सारा शास्त्र परमेश्वर की सांस है," लोकप्रिय सिद्धांत यह वही है जो हम जानते हैं कि सच है।

इसलिए आपको किसी भी भविष्यवक्ता का न्याय करना होगा, आपको उन्हें शास्त्रों के आधार पर आंकना होगा। और यह वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि, वास्तव में, जब आप पुराने नियम में जाते हैं तो क्या वहाँ अधिक सच्चे भविष्यवक्ता हैं या अधिक झूठे भविष्यवक्ता हैं? आप यिर्मयाह 23 जैसी जगहों पर जाते हैं, आप व्यवस्थाविवरण में भी जाते हैं, वहाँ झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में चेतावनियाँ हैं। और, वैसे, झूठे भविष्यवक्ता चमत्कार भी करते हैं, संकेत और चमत्कार देते हैं। इसलिए झूठे भविष्यवक्ता हैं और अक्सर झूठे भविष्यवक्ताओं की संख्या सच्चे भविष्यवक्ताओं से अधिक होती है। आप कैसे तय करेंगे कि कोई सच्चा भविष्यवक्ता है या झूठा भविष्यवक्ता? आपके पास शास्त्र है। शास्त्र परमेश्वर का वचन है। इसे पिछले रहस्योद्घाटन से सहमत होना होगा, यदि वे पिछले रहस्योद्घाटन से सहमत या असहमत हैं तो वे लोग झूठे भविष्यवक्ता हैं। और इसलिए मुझे लगता है कि मैं जो सुझाव दूंगा वह यह है कि सावधान रहें। आप अब झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में बहुत अधिक बात नहीं सुनते हैं। झूठे भविष्यवक्ता क्या कहते हैं? भविष्यवक्ता कहते हैं, "शालोम, शांति और परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद देगा।" जब आप पुराने नियम को देखते हैं, तो झूठे भविष्यवक्ता हमेशा शांति और ईश्वर के प्रेम का प्रचार करते हैं। सच्चे भविष्यवक्ताओं ने क्या प्रचार किया? पश्चाताप करने वाले पापियों। लोगों को सच्चे भविष्यवक्ताओं का संदेश पसंद नहीं आता, इसलिए वे हमारे सिर पर थपथपाने वाले और ईश्वर की ओर से हमें अच्छी बातें बताने वाले व्यक्ति की तरह हैं। लेकिन अधिकतर बार भविष्यवक्ता न्याय के संदेशवाहक होते थे और लोगों को अपने पापों का पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करते थे। तो यह एक और बात है जिसे आपको अपने दिमाग में रखना चाहिए, जब कोई व्यक्ति शांति और प्रेम, शालोम, शांति और प्रेम जैसी चीजों के साथ आ रहा हो, तो आपको उससे बहुत सावधान रहना चाहिए। बाइबल में झूठे भविष्यवक्ताओं का यही संदेश है।

लेकिन क्या अब कोई बाइबल के बारे में वाकई परवाह करता है? नहीं! हम इसे भूल जाते हैं, हम शालोम सुनना चाहते हैं, हम शांति और दया सुनना चाहते हैं। मैं अपनी आवाज़ में कुछ हद



तक व्यंग्य के साथ यह कहता हूँ क्योंकि यह बहुत दिलचस्प है कि कैसे हमारी आधुनिक संस्कृति ने वास्तव में भूमिकाओं को उलट दिया है। वैसे भी कुछ ऐसा है जिसे बस अपने दिमाग में रख लें, कुछ ऐसा जिसके बारे में सोचना चाहिए, भविष्यवक्ता और भविष्यवक्ता। फिलिप की चार भविष्यवक्ता बेटियाँ हैं।

## **डब्ल्यू. भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना साम्यवाद नहीं था [90:42-95:04]**

**जे: कम्बाइन डब्ल्यूएक्स; 90:12-97:56; आरंभिक चर्च में परोपकार**

उन्होंने चर्च की भौतिक ज़रूरतों को पूरा किया और हमने पहले भी डीकन की भूमिका के बारे में कुछ बातें बताई हैं। मुझे इस पर कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए। अध्याय 2 पद 45। “अपनी संपत्ति और सामान बेचकर वे जिसे जिसकी ज़रूरत थी उसे देते थे।” इसलिए, उन्होंने अपनी संपत्ति और सामान बेचकर हर उस व्यक्ति को दिया जिसे ज़रूरत थी। और फिर अध्याय 4 पद 32-37, “सभी विश्वासी एक दिल और एक मन के थे; किसी ने भी दावा नहीं किया कि उसकी कोई संपत्ति उसकी है, बल्कि उनके पास जो कुछ भी था, उन्होंने उसे साझा किया। प्रेरितों ने बड़ी ताकत के साथ प्रभु यीशु के पुनरुत्थान की गवाही देना जारी रखा। उनके बीच कोई ज़रूरतमंद व्यक्ति नहीं था, वे साझा करते थे और उनकी चीज़ें आम थीं।”

कुछ लोगों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस अंश को लिया और इसे समाजवाद या साम्यवाद या कुछ इसी तरह के आधार के रूप में उपयोग करने का प्रयास किया। साम्यवाद, बेशक, एक बुरा वाक्यांश है, लेकिन समाजवाद भी। लेकिन जब हम समुदाय के प्रति प्रतिक्रिया के बारे में बात करते हैं तो हम शायद इसे थोड़ा और पवित्र कर देते हैं। अब हमेशा समुदाय पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। वास्तव में, प्रारंभिक चर्च एक समुदाय केंद्रित था, लेकिन सवाल पर ध्यान दें। इसमें और - मेरे पास जो समस्या है, उसमें क्या अंतर है कि लोग आज एक राजनीतिक प्रणाली का समर्थन करने के लिए प्रेरितों के काम में इस सामग्री का उपयोग कर रहे हैं। मुझे लगता है कि आपको उस समय के शास्त्रों को लेने और आज किसी तरह के राजनीतिक ढांचे का समर्थन करने की कोशिश करने के बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए। समाजवाद और साम्यवाद यहाँ क्या कहते हैं? कि लोग आए और दूसरों को दिया जिन्हें ज़रूरत थी। वैसे, क्या सरकार उन्हें ऐसा करने

के लिए मजबूर कर रही थी? क्या सरकार ऐसा करने के लिए बाध्य कर रही थी? नहीं, नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के पास इसे अपना सामान बनाने का विकल्प था और वे इसे देने या न देने का विकल्प चुन सकते थे। और इसलिए आपको इस बात को लेकर बहुत सावधान रहना होगा कि आप यह न कहें कि हर किसी को देना चाहिए और हम मांग करेंगे कि वे ऐसा करें। आप लोगों से चुनाव छीन रहे हैं। वैसे, ईश्वर खुद उस स्वतंत्रता को नहीं छीनता। ईश्वर खुद लोगों को चुनने की अनुमति देता है; आप मसीह को चुन सकते हैं या मसीह को अस्वीकार कर सकते हैं। चुनाव आपका है और इसलिए आपको इस बारे में बहुत सावधान रहना होगा। इसलिए सावधान रहें जब कोई इस तरह की आयतों को समाजवाद और साम्यवाद में मिलाना शुरू करे। हम साम्यवाद में ज़्यादातर स्थितियों को जानते हैं, लगभग सभी जो मुझे पता है, जब साम्यवाद आता है, तो वे सामान को चारों ओर फैला देते हैं और फिर क्या होता है? हर कोई गरीब हो जाता है। और फिर मूल रूप से लाखों लोग मर जाते हैं। लाखों लोग मरते हैं। रूस में स्टालिन के शासन में 20 मिलियन से ज़्यादा लोगों की हत्या की गई। और चीन में माओ के शासन में 80 मिलियन लोग मारे गए। हिटलर, हर कोई कहता है, "हिटलर बहुत बुरा था। माओ हिटलर को सात साल के बच्चे जैसा दिखाता है। माओ ने चीन में 80 मिलियन से ज़्यादा लोगों को मार डाला। और इसलिए अगर आप साम्यवाद चाहते हैं, तो क्यूबा जाएँ। लोग अमेरिका की ओर क्यों तैर रहे हैं? आप यूगोस्लाविया में जाते हैं और आप वेनेजुएला में जाते हैं और अब उन्होंने ह्यूगो शावेज़ के अधीन समाजवाद/साम्यवाद को अपना लिया है। और जब आप किराने की दुकान पर जाते हैं तो क्या होता है। किराने की दुकानें अब बंजर हो गई हैं। लोगों को भोजन की समस्या हो रही है। उत्तर कोरिया को देखें और फिर मुझे साम्यवाद के बारे में बताएं। लोग वहाँ भूख से मर रहे हैं। उन्होंने सेना में शामिल होने के लिए ऊँचाई की सीमा कम कर दी है क्योंकि उत्तर कोरिया में लोग इतने लंबे समय से भूखे हैं कि अब सेना में शामिल होने के लिए आपको सिर्फ़ चार फुट नौ इंच का होना चाहिए। उन्हें वास्तव में ऊँचाई की आवश्यकता कम करनी पड़ी क्योंकि उत्तर कोरिया में भोजन की बहुत कमी होने के कारण लोग छोटे होते जा रहे हैं। लोगों, बाइबल लेने और मुक्ति धर्मशास्त्र में कूदने से पहले इस बारे में सोचें, जिसका इनमें से बहुत से लोग समर्थन करते हैं। साम्यवाद और मुक्ति धर्मशास्त्र के बीच वास्तविक संबंध है। वे जो करते हैं वह यह है कि वे धर्म का उपयोग इन बहुत ही बुरे राजनीतिक ढाँचों को समर्थन देने के लिए करते हैं और

धर्म राजनेताओं का हाथ बन जाता है और उस समय आपको वास्तविक परेशानी होती है। मूल रूप से यही वहाँ होता है। तो, वैसे भी, इस सामान से सावधान रहें।

## **X. हनन्याह, सफ़ीरा और आधुनिक परोपकार [95:04-97:56]**

हनन्याह और सफ़ीरा के बारे में क्या ? हनन्याह और सफ़ीरा आरंभिक चर्च में आए और कहा, "अरे, हमने अपना सारा माल बेच दिया है।" प्रेरितों के काम 5 "हमने अपना सारा माल बेच दिया, इसे गरीबों को दे दिया और यह यहाँ है।" प्रेरितों ने जवाब दिया, "क्या यह सब कुछ है जो आपने बेचा है जो आप दे रहे हैं।" वह कहता है, "हाँ।" वह आदमी मर जाता है। हनन्याह की हत्या कर दी जाती है। उसकी पत्नी आती है और वे पूछते हैं "क्या आपने यह सब सामान गरीबों को दे दिया है?" और इसलिए सफ़ीरा नीचे गिर गई और भगवान ने उन दोनों को बाहर निकाल दिया। अब, वह कहता है, "जब आपके पास आपका माल था तो यह आपका विशेषाधिकार था कि आप उससे जो चाहें कर सकते थे। आप जो चाहें करने का चुनाव कर सकते थे लेकिन आप भगवान से झूठ नहीं बोल सकते। आप आकर यह नहीं कह सकते, 'मैं यह सब दे रहा हूँ।'" ऐसा करना उनका चुनाव था। इसलिए मैं बस इतना कह रहा हूँ कि जब लोग यह कहते हुए लोगों से चुनाव छीनना शुरू करते हैं कि आपको यह करना है तो सावधान रहें। यह एक दायित्व है और ऐसी चीजें हैं जो आपको करनी ही चाहिए। बेहतर होगा कि आप लाल झंडे लगा दें। ईसाई धर्म, यह खुले हाथों से और स्वतंत्र पसंद के उपहार के रूप में प्रकट होता है कि व्यक्ति दिल से यीशु के लिए भावुक है, देने की इच्छा रखता है और गरीबों की मदद करना चाहता है, यह एक व्यक्तिगत पसंद है। वैसे, दुनिया में ऐसा कौन सा देश है जिसने दुनिया भर में किसी भी अन्य देश की तुलना में मदद के लिए अधिक दिया है? आपके पास बिल गेट्स जैसे लोग हैं जो अफ्रीका में एड्स के लिए अरबों डॉलर डालते हैं और वहाँ एड्स से जुड़ी कुछ समस्याओं को हल करते हैं, साथ ही मलेरिया जो लाखों लोगों को मार रहा है और सैकड़ों हज़ार लोग मलेरिया से मर रहे हैं। मलेरिया और इन अकालों और इन विपत्तियों की दुर्दशा को कम करने के लिए काम करना गेट्स जैसे लोगों के लिए अद्भुत काम है और अन्य लोग गरीबों की मदद करने के लिए कर रहे हैं क्योंकि उनके पास धन है और वे इसे देना चाहते हैं। यह सरकार की मांग नहीं है। वे इसे करना चुनते हैं और यह परोपकार एक अद्भुत चीज

है क्योंकि यह दिल से आता है, एक स्वतंत्र दिल जो देने का विकल्प चुनता है। और यह किस राजनीतिक/आर्थिक मॉडल से है? तो ये चीजें प्रारंभिक चर्च की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में शामिल थीं, लेकिन इनमें से कुछ प्रकार की चीजों के बारे में सावधान रहें।

प्रारंभिक चर्च में एकता थी। प्रेरितों के काम 2:44 में एकता पर ये कथन हैं। और मैं इस पर बहुत समय नहीं बिताना चाहता लेकिन चर्च एक जगह पर इकट्ठा हुआ था और वे एक साथ थे। मुझे बस यह अध्याय 2 पद 44 पढ़ना है। अध्याय 2 पिनतेकुस्त पर एक अध्याय है और इसमें कहा गया है "सभी विश्वासी एक साथ थे और उनके पास सब कुछ साझा था। उन्होंने अपनी संपत्ति और सामान बेचकर सभी को उनकी ज़रूरत के हिसाब से दिया।" हमने पहले इस पर गौर किया था। आइए यहाँ से अपनी अगली स्लाइड पर चलते हैं।

## Y. लूका ने किन स्रोतों का उपयोग किया? [97:56-100:12]

**K: संयुक्त Y-AC; 97:56-113:50; स्रोत और समस्याएं**

लूका ने किन स्रोतों का उपयोग किया? आइए यहाँ कुछ स्रोतों पर नज़र डालते हैं। और यहाँ थोड़ा और विस्तार से बताते हैं। हमने कहा कि लूका, प्रेरित पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा तक मौजूद नहीं था। इसलिए प्रेरितों के काम के पहले पंद्रह अध्यायों में लूका वहाँ नहीं था। वह कैसरिया कारावास के दौरान पौलुस के साथ था और इसलिए लूका दो साल तक फिलिस्तीन में रहेगा। मेरा अनुमान है कि जब वह फिलिस्तीन में था, तो उसने मरियम से मुलाकात की और विभिन्न लोगों से मुलाकात की और लूका की पुस्तक और प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखने के संदर्भ में उनका साक्षात्कार लिया, जबकि पौलुस फिलिस्तीन के तट पर कैसरिया में जेल में था। उसके पास शायद एक यात्रा डायरी रही होगी, क्योंकि वह पौलुस के साथ यात्रा कर रहा था, पौलुस उसे मिशनरी यात्राओं के बारे में बताता था और उसने पौलुस से कहानियाँ सुनी थीं और कहानियाँ शायद कई अलग-अलग तरीकों और समयों पर बार-बार सुनाई गई थीं। आप जानते हैं कि मैं कैसे कह रहा था, लोग तीस, चालीस वर्षों से जी रहे एक ही कहानी सुनाते हैं, आपको एहसास होता है कि आप एक ही कहानी बार-बार सुनाते हैं, कभी भी बिल्कुल एक जैसी नहीं। आप थोड़ा जैज़ और इम्प्रोवाइजेशन करते हैं और संदर्भ के आधार पर कहानी को किस तरह बताया जाता है। संभवतः

लूका ने यात्रा डायरी सुनी होगी और इसलिए उसने खुद भी यात्रा डायरी लिखी होगी क्योंकि वह त्रोआस से फिलिप्पी तक की दूसरी मिशनरी यात्रा पर पॉल के साथ था। तीसरी मिशनरी यात्रा पर, जब पॉल फिलिप्पी वापस आता है तो वह फिर से उसके साथ होता है।

प्रेरितों के काम 7 में स्टीफ़न का भाषण बहुत बड़ा है। प्रेरितों के काम 7 में स्टीफ़न का एक सुंदर संदेश है। प्रेरितों के काम 7 में स्टीफ़न का भाषण इतना बड़ा क्यों है? बहुत संभव है क्योंकि पॉल वहाँ था और पॉल यह अध्याय नौ में पॉल की बातचीत से पहले है, यह अध्याय सात में है, पॉल स्टीफ़न की मृत्यु को स्वीकार कर रहा था और इसलिए यह बहुत संभव है कि पॉल ने स्टीफ़न के उपदेश को देखा, उसे याद किया और शायद अपने मन में इसे बार-बार दोहरा रहा था। स्टीफ़न का वहाँ एक बहुत बढ़िया, अद्भुत उपदेश है और इसलिए ल्यूक ने, बहुत संभव है कि पॉल से स्टीफ़न के बारे में यह उपदेश लिया हो।

### **प्रेरितों के काम और पतरस के प्रथम पत्र में पतरस के भाषण [100:12-103:10]**

पीटर के भाषण, दिलचस्प बात यह है कि लूका को ये विभिन्न भाषण मिलते हैं। मुझे लगता है कि पीटर के लगभग नौ भाषण हैं। याद रखें कि मैथ्यू की पुस्तक में हमें यीशु के ये सभी महान उपदेश मिले थे, ठीक है, प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमें पीटर के ये उपदेश मिलते हैं। वास्तव में दिलचस्प बात यह है कि इस वर्ष न्यू टेस्टामेंट साहित्य वर्ग के लिए हमने जो लेख पढ़ा, उसके लेखकों में से एक ने पीटर की पुस्तकों और लूका में पीटर के भाषणों के बीच तुलना की है। तो 1 और 2 पीटर और प्रेरितों के काम की पुस्तक के बीच तुलना है और आप पाते हैं कि ल्यूक, जाहिर तौर पर, कुछ बिंदुओं पर इन भाषणों को शब्दशः उठाता है। दूसरे शब्दों में, पीटर द्वारा पत्रों में उपयोग किए गए कुछ विशेष शब्द प्रेरितों के काम की पुस्तक में भी दिखाई देते हैं। ये दुर्लभ शब्द हैं इसलिए यह तानाशाही नहीं है। मैं कहना चाहता हूँ कि यह शब्दशः नहीं है, कि वह भाषण को उद्धृत कर रहा है क्योंकि ज्यादातर वे संभवतः सारांश हैं। लेकिन सारांश भी मूल वक्ता के लिखे शब्दों को ही ग्रहण करते प्रतीत होते हैं। मुझे लगता है कि मैं यही कहना चाहता हूँ। मूल वक्ता के पास कुछ वाक्यांश हैं जिनका उन्होंने इस्तेमाल किया और ऐसा लगता है कि लूका ने सावधानी

बरती और इतना ध्यान दिया कि वह वास्तव में उन्हें ग्रहण कर लेता है। इसलिए जब पतरस प्रेरितों के काम की पुस्तकों में बोलता है तो यह पतरस के खुद के लिखे शब्दों और शैली को दर्शाता है। और अगर आप 1 पतरस 1:2 की तुलना प्रेरितों के काम 2:23 से करें तो पित्तुकुस्त के समय पतरस इस वाक्यांश का उपयोग करता है, "एक निश्चित उद्देश्य और पूर्वज्ञान के लिए," यह उन दोनों के बीच बिल्कुल समान है। तो यह सिर्फ यह दर्शाता है कि वह सीख रहा है। इसी तरह वाक्यांश "चाँदी या सोना", क्या आपको याद है जब पतरस और यूहन्ना अपंग को ठीक करने जा रहे थे? वह कहता है, "चाँदी या सोना मेरे पास कुछ भी नहीं है, लेकिन जो मेरे पास है, उसे बाहर निकालो और चलो ठीक है यह चाँदी या सोने का संयोजन है जो 1 पतरस 1:18 में भी है। अब, यह आश्चर्यजनक है कि आप जानते हैं कि यह कमजोर होगा क्योंकि सोने की चाँदी बहुत से लोग चाँदी या सोने का उल्लेख करते हैं लेकिन यह बहुत दिलचस्प है कि यह पीटर के उपदेशों और पीटर के पत्र दोनों में होता है।

यहाँ एक और जटिल वाक्य है, "जीवितों और मृतकों का न्यायी।" यह वाक्यांश नए नियम में भी बहुत ज़्यादा नहीं पाया जाता है, फिर भी यह प्रेरितों के काम 10:42 में पतरस के उपदेश में है और 1 पतरस 4:5 में भी पाया जाता है। इसलिए हम कहना चाहते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज भाषणों और पत्रों के बीच ये समानताएँ हैं जो हमें दिखाती हैं कि लूका ऐतिहासिक रूप से सटीक है। अब, कोई नहीं कहेगा - जब पतरस उपदेश देता है, तो ज़्यादातर उपदेश हमें दस या बीस आयतों में मिलते हैं, जो आयतों के बीच कुछ इस तरह के होते हैं। आप महसूस करते हैं कि इसमें एक या दो मिनट लगते हैं। हमारे पास एक सारांश है; हमारे पास सार-संक्षेप हैं, सारांश हैं कि वे क्या हैं। लेकिन जाहिर है, लूका, इन सारांशों में भी उस व्यक्ति के लिखे हुए शब्दों को उठाता है जिसने इसे दिया था।

### **ए.ए. प्रेरितों के काम में पतरस और पौलुस की समानता [103:10-107:07]**

यहाँ कुछ और उदाहरण दिए गए हैं जब पीटर और पॉल की तुलना की गई है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के शुरुआती अध्यायों के बीच एक दिलचस्प समानता है। आपने पीटर को कुछ काम करते हुए दिखाया है और बाद के अध्यायों में आपने पॉल को कुछ काम करते हुए दिखाया है। इसलिए पीटर से पॉल की ओर एक बदलाव है। मुझे भी आश्चर्य हुआ कि मैरी के साथ क्या हुआ।

पीटर, पॉल और आपने यह तुलना की है। वैसे यह कुछ हद तक समान है, जैसा कि आपको पुराने नियम से याद है। क्या आपको मूसा, यहोशू और मूसा और यहोशू की तुलना याद है? मूसा ने लाल सागर में पानी को विभाजित किया; यहोशू ने जॉर्डन नदी के पार पानी को विभाजित किया। मूसा ने अपना भाला उठाया और वे युद्ध जीत गए। यहोशू ने अपना भाला, अपना बरछा उठाया और वे युद्ध जीत गए। मूसा एक देवदूत के पास जाता है और देवदूत उसके पास जाता है, और यहोशू एक देवदूत के पास जाता है। "अपनी चप्पल उतारो तुम पवित्र भूमि पर हो।" मूसा और यहोशू के बीच एक बहुत ही समान तुलना है, नेतृत्व में परिवर्तन है, वहाँ नेतृत्व में परिवर्तन है।

इसी तरह, यहाँ भी नेतृत्व में बदलाव हुआ है। पतरस पिन्तेकुस्त के समय, पवित्र आत्मा के आगमन पर, आरंभिक चर्च में एक बड़ा प्रेरित था। पतरस और फिर बाद में अध्याय 13 में और प्रेरितों के काम की पुस्तक में पॉल की ओर बदलाव हुआ। लेकिन आप देख सकते हैं कि वे दोनों पुनरुत्थान का प्रचार करते हैं। पतरस अध्याय 2 पद 22 में और पॉल अध्याय 13 पद 26 में इसका प्रचार करता है। वे दोनों एक अपंग व्यक्ति को ठीक करते हैं। पतरस और पॉल दोनों एक अपंग व्यक्ति को ठीक करते हैं। यह पतरस के लिए प्रेरितों के काम 3:1 में और पॉल के लिए अध्याय 14 पद 8 में पाया जाता है। वे दोनों एक अपंग व्यक्ति को ठीक करते हैं। दोनों लोगों पर हाथ रखते हैं और पवित्र आत्मा उन पर आता है। पवित्र आत्मा के लिए HS को संक्षिप्त करने के लिए क्षमा करें। लेकिन पतरस अध्याय 8 पद 17 में ऐसा करता है। मेरा मानना है कि यह वहाँ सामरियों के साथ है। पॉल प्रेरितों के काम 19:6 में ऐसा करता है, वह हाथ रखता है और कुछ विशेष लोगों को इफिसुस में पवित्र आत्मा प्राप्त होता है। हम बाद में विशेष उपचारों और लोगों की भीड़ के परिणाम के बारे में बात करेंगे। प्रेरित पतरस अध्याय 5 पद 15 में विशेष उपचार करता है। और वहाँ एक भीड़ है और पौलुस अध्याय 19 पद 12 में एक विशेष उपचार करता है और वहाँ एक भीड़ है। दोनों मामलों में उन्हें जेल में डाल दिया जाता है। पतरस जेल जाता है; पौलुस जेल जाता है। वे पतरस के लिए प्रार्थना करते हैं; पतरस जेल से बाहर निकलता है। पौलुस जेल जाता है, जेल में गाना बजता है और अचानक दोनों मामलों में एक स्वर्गदूत पतरस और पौलुस को रिहा कर देता है। अध्याय 12 पद 6 में पतरस। अध्याय 16 पद 25 में पौलुस। एक स्वर्गदूत आता है और पतरस को जेल से मुक्त करता है और एक स्वर्गदूत आता है और पौलुस को जेल से मुक्त करता है। तो इन दोनों लोगों के बीच

बहुत ही समान समानता है। वास्तव में यहाँ पुस्तक पर जोर दिया जाना दिलचस्प है।

पॉल के धर्म परिवर्तन का उल्लेख तीन बार किया गया है। कॉर्नेलियस की बातचीत की तीन कहानियाँ भी हैं, कॉर्नेलियस हमारा गैर-यहूदी बनने जा रहा है। इस बिंदु तक ज़्यादातर चर्च यहूदी था। अब, यह बदलने जा रहा है और गैर-यहूदी बनने जा रहा है और यह गैर-यहूदियों के लिए खुलने जा रहा है। डॉ. विल्सन कहते हैं कि जैतून के पेड़ में कलम लगाई जाएगी। अब, इस गैर-यहूदी शाखा के जैतून के पेड़ के तने में आने के साथ और तीन धर्म परिवर्तन दर्ज किए गए हैं। कॉर्नेलियस की बातचीत की कहानी तीन बार बताई गई है।

तीन बार पॉल जेल में है। वह राज्यपालों के बीच जाता है और पॉल फेलिक्स, फेस्तुस और अग्रिप्पा के सामने तीन बार ये संदेश देता है। यह प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाद के अध्यायों में अध्याय 24 के आसपास और उसके आसपास है। तीन बार, वह एक रोमन राज्यपाल के सामने जाता है और अपना बचाव करता है। तो आप पुस्तक में इस तरह की लय देखते हैं जो दोहराव के साथ आती है।

### **ए.बी. यहूदा की मृत्यु का स्पष्ट विरोधाभास [107:07-110:18]**

अब, यह वह जगह है जहाँ हम इस व्याख्यान के लिए अपनी चर्चा समाप्त करेंगे और मैं बस इस पर चर्चा करना चाहता हूँ। कुछ लोग कहते हैं कि प्रेरितों के काम 1:18 और मत्ती 27:5 के बीच विरोधाभास है। प्रेरितों के काम 1:18 बनाम मत्ती 27:5 और उसके बाद। अब, यहाँ है - यहूदा के साथ क्या हुआ? यह सवाल है। और वे कहते हैं कि प्रेरितों के काम और मत्ती के बीच यहूदा के साथ क्या हुआ, इस बारे में विरोधाभास है। इसलिए बाइबल खुद से विरोधाभास करती है इसलिए बाइबल में गलतियाँ हैं। आप जानते हैं कि लोग हमेशा ऐसा ही करते हैं। आइए इस पर नज़र डालें। अब, जैसा कि हमने पहले कहा कि अलग-अलग गवाह हो सकते हैं जो कहानी को अलग-अलग तरीके से देखते हैं। क्या अलग-अलग गवाह इस कहानी को अलग-अलग तरीके से रिकॉर्ड कर सकते हैं? जब आपके पास एक ही बास्केटबॉल खेल में दो रेफरी होते हैं तो क्या वे अलग-अलग तरीके से देख सकते हैं कि क्या हुआ। एक व्यक्ति फ़ाउल को देखता है और दूसरा व्यक्ति उसी जगह को देख रहा है लेकिन फ़ाउल को नहीं देख पाता है। तो यहाँ हम प्रेरितों के काम 1:18 में क्या



देखते हैं। इसमें लिखा है कि यहूदा के साथ ऐसा ही हुआ, "अपनी दुष्टता के लिए मिले इनाम से यहूदा ने एक खेत खरीदा।" किसने खेत खरीदा? "यहूदा ने एक खेत खरीदा।" "वहाँ वह सिर के बल गिरा, उसका शरीर फट गया और उसकी अंतड़ियाँ बाहर निकल आईं और यरूशलेम में सभी ने इसके बारे में सुना।" यहूदा की मृत्यु कैसे हुई? यहूदा ने एक खेत खरीदा; फिर वह नीचे गिरा और उसका शरीर फट गया और उसकी अंतड़ियाँ/आंतें बाहर निकल आईं - यहाँ थोड़ी बहुत जानकारी है। इस तरह यहूदा की मृत्यु हुई।

अब मैथ्यू के पास वापस जाएँ। मैथ्यू ने यहूदा की मृत्यु के बारे में क्या कहा? मैथ्यू 27:5, "जब यहूदा, जिसने उसे धोखा दिया था, ने देखा कि यीशु को दोषी ठहराया गया था, तो उसे पश्चाताप हुआ और उसने तीस चाँदी के सिक्के मुख्य याजकों और पुरनियों को लौटा दिए। 'मैंने पाप किया है,' यहूदा ने कहा। इसलिए यहूदा ने पैसे मंदिर में फेंक दिए और चला गया। फिर हम चले गए और खुद को फाँसी लगा ली।" तो यहूदा की मृत्यु कैसे हुई? यहूदा चला गया और उसने खुद को फाँसी लगा ली, इसलिए वह इस तरह मर गया। "मुख्य याजकों ने सिक्के उठाए और कहा, 'इसे राजकोष में डालना कानून के विरुद्ध है, क्योंकि यह खून का पैसा है।' इसलिए, उन्होंने विदेशियों के लिए दफनाने के लिए कुम्हार के खेत को खरीदने के लिए पैसे का उपयोग करने का फैसला किया। यही कारण है कि यह आज तक खून का खेत रहा है"।

अब, उन दो कहानियों में क्या अंतर है? एक में यहूदा खेत खरीदता है और फिर यहूदा सिर के बल गिरता है और उसका पेट फट जाता है। दूसरी कहानी में, यहूदा वापस महायाजक के पास जाता है और उन पर तीस चाँदी के सिक्के फेंकता है। और फिर, वह बाहर जाता है और खुद को फाँसी लगा लेता है और वे पैसे लेकर खेत खरीद लेते हैं।

### **ए.सी. विरोधाभास का संभावित समाधान [110:18-113:50]**

तो कौन सा सही है? वे विरोधाभासी लगते हैं। खैर, अगर आप में से कोई रचनात्मक व्यक्ति है तो आप समझ सकते हैं कि वे दोनों सत्य हैं। वे सिर्फ एक अलग कहानी बता रहे हैं जब यह कहा जाता है कि यहूदा खेत खरीदता है, क्या उसने खेत खरीदा? हाँ, अपने तीस सिक्कों के साथ यहूदी नेता बाहर जाकर खेत खरीदते थे। तो चाहे मैं बाहर जाऊँ और सैम्स क्लब जाऊँ और वहाँ जाकर

सामान खरीदूँ। या मैं अपने बेटे को अपना वीज़ा कार्ड दूँ और वह सैम्स क्लब जाकर कुछ सामान खरीद ले। कौन सामान खरीद रहा है, "अरे, यह मेरे कार्ड पर है। मैं सामान खरीद रहा हूँ।" वह वही है जिसने वास्तव में ऐसा किया, लेकिन फिर भी मैं ही वह हूँ जिसने सामान खरीदा। तो क्या यहूदा ने खेत खरीदा? हाँ, ठीक है, उसने पुजारियों के मध्यस्थों के माध्यम से ऐसा किया। अब, इस बारे में क्या कि उसने खुद को फाँसी लगाकर मार डाला, या जब वह गिरा तो उसकी साँसें फूट पड़ीं? ज्यादातर लोगों को लगता है कि उसने शायद खुद को फाँसी लगा ली और इसी तरह उसने खुद को मार डाला और फिर जब वह खुद को फाँसी लगाने लगा तो वह नीचे गिर गया और रस्सी - दूसरे शब्दों में, क्या हुआ? पक्षी रस्सी पर चोंच मारते हैं या रस्सी टूट जाती है या कुछ और होता है और जब वह खुद को फाँसी लगाता है तो वह चट्टानों पर गिर जाता है और उसकी आंते फट जाती हैं। मूल रूप से, आपको यह क्रम मिलता है, फाँसी लगाना और फिर फाँसी से गिरना और उसकी आंते फट जाना। तो, दोनों ही बातें सच हो सकती हैं।

तो इसे सामंजस्य स्थापित करना कहते हैं और कुछ लोग घृणा करते हैं या आप बस सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। जवाब है: हाँ। मैं बाइबल पर भरोसा करता हूँ, क्योंकि बाइबल ने मुझे सैकड़ों और हजारों डेटा दिए हैं जो सच्चे डेटा हैं। इसलिए जब मैं देखता हूँ कि यहाँ थोड़ा सा अंतर है, तो मुझे लगता है, आपको एक या दो हफ्ते पहले की बात याद होगी, जब उन्होंने उस महिला के बारे में बात की थी जिसे बस ने टक्कर मारी थी? महिला को बस ने टक्कर मारी थी, वह मरी नहीं और फिर दूसरी कहानी कहती है कि नहीं, महिला कार में टकराई और तुरंत कार से बाहर फेंक दी गई और कौन सी कहानी सच है? खैर, वे दोनों ही सच थीं। महिला को पहले बस ने टक्कर मारी थी। फिर अस्पताल जाते समय कार ने दूसरी बार टक्कर मारी और वह बाहर फेंकी गई और तुरंत मर गई। तो, वास्तव में, दोनों कहानियाँ सही थीं। मुझे लगता है कि यहाँ आपके पास यही है, दूसरे शब्दों में बस अलग-अलग दृष्टिकोण। प्रेरितों के काम हमें क्षेत्र पर अधिक ध्यान केंद्रित करने और उसकी हिम्मत तोड़ने के बारे में बता रहे हैं। मैथ्यू इसे मुख्य पुजारियों और तीस शेकेल चांदी और फाँसी के संदर्भ में अधिक बता रहे हैं। तो दोनों कहानियाँ सत्य हैं लेकिन वे एक दूसरे की पूरक हैं। वे एक ही कहानी नहीं हैं।

यही कारण है कि मुझे बाइबल बहुत पसंद है, हजारों सालों तक इसकी नकल करने वाले

शास्त्रियों से। वे कह सकते थे, "ओह यह कहानी इस कहानी से अलग है, आइए उन्हें सुसंगत बनाने की कोशिश करें, आइए पाठ को बदलें। उन्होंने पाठ को नहीं बदला, उन्होंने पाठ को संघर्षों के साथ रहने दिया, और संघर्षों को उन्होंने रहने दिया और यह मुझे शास्त्रों की ऐतिहासिकता के बारे में और अधिक बताता है। शास्त्रों को इन शास्त्रियों द्वारा रास्ते में छेड़छाड़ नहीं की गई थी। नहीं, उन्होंने इन स्पष्ट विरोधाभासों को रहने दिया और आपको पाठ में गहराई से देखना होगा और यही हम करने का प्रयास कर रहे हैं।

तो आइए हम यहीं रुकें और जब हम वापस आए तो हम प्रेरितों के काम 2 को देखेंगे और प्रेरितों के काम की पुस्तक के कुछ भाग को विशेष रूप से पढ़ेंगे।

केली चांग-फोंग द्वारा लिखित  
बेन बोडेन द्वारा संपादित  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित रफ